भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 07 | उदयपुर गुरूवार 15 अप्रेल 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राजस्थान का बहुप्रसिद्ध प्रेमाख्यान- ढोलामारू

'ढोलामारू' पूंगल के राजा पिंगल की कुमारी मारवण तथा नरवर के राजा नल के कुमार ढोला की दोहाबद्ध सुप्रसिद्ध प्रेमगाथा है जो राजस्थान में अत्यंत लोकप्रिय रही है। इसके दूहे आज भी गोरबन्द, पणिहारी तथा पीपली गीतों की तरह बहुत से लोगों के कलकण्ठों से सुनने को मिलते हैं। राजस्थानी घरों में दीवालों पर ढोला मारवणी के चित्र आज भी कई जगह देखने को मिलते हैं। विवाह शादियों में ऊंट पर जाते हुए ढोला मारवणी के चित्रों को अंकित कराने की स्वस्थ परंपरा अब भी प्रचलित है।

महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा को अपनी ऐतिहासिक यात्रा में अलवर राज्य के किसी गांव में ढोलामारू की मूर्तियां देखने को मिली थीं। अजमेर में होली के दिनों में ढोलामारू की सवारी निकालने का भी उन्होंने जिक्र किया जिसमें एक औरत एक पुरुष को जूतों से मारती है। इन सभी बातों से यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि ढोलामारू का आख्यान राजस्थान में सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है। इसके विषय में कहा जानेवाला यह दोहा-

सोरठियो दूहो भलो, भली मारवण री वात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

ढोलामारू के रचानाकार के बारे में अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि आरंभ में यह किसी एक लेखक की संभवत: ढोली-ढाढ़ी जाति के किसी व्यक्ति की रचना रही परन्तु इसके वर्तमान रूप का निर्माता तो कोई एक कवि न होकर समस्त जनता ही है।

ऐसा कहा जाता है कि जैसलमेर के रावत हरराज ने अपने दरबारी कवियों में से ढोलामारू की कथा के प्रचलित दूहों को एकत्रित कर उन्हें यथाक्रम लगाकर सर्वोत्तम ग्रंथ रचना करनेवालों को पुरस्कार देने की घोषणा की थी और अंत में वह पुरस्कार कुशललाभ को प्राप्तहुआ। कुशललाभ की ढोलामारू की चौपाइयों का उन दिनों इतना अधिक प्रचार हुआ कि शायद ही कोई ऐसा जैन पुस्तक भंडार हो जहां उसकी प्रतियां प्राप्त न हो। इस समय ढोलामारू काव्य के चार रूपांतर हमें प्राप्त होते हैं- (अ) जिसमें केवल दूहे हैं और जो प्राचीन है (ब) जिसमें दूहे और कुशललाभ की चौपाइयां हैं (स) जिसमें दूहे और गद्यवार्ता है (द) जिसमें दूहे, कुशललाभ की कुछ चौपाइयां तथा गद्यवार्ता है। इसमें प्रारंभ के दो रूपांतर अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

विवाह के समय मारवणी की अवस्था डेढ़ वर्ष तथा ढोला की तीन वर्ष थी। मारवणी की इतनी छोटी अवस्था के कारण उसे उसके सुसराल नहीं भेजीगई। कुछ वर्ष व्यतीत होनेपर धीरे-धीरे मारवणी ने यौवन की देहली में प्रवेश पाया।

हंस चलण, कदलीह गन्ध, कटि केहर जिमर वीण।
मुख सिसहर, खंजर नयण कुछ श्रीफल कंठवीण।।

मारवणी को स्वप्न में एक दिन साल्हू कुम्हार मिला परन्तु जागने पर वह प्रियवियोग के कारण नि:श्वासें भरनेलगीं। विरहिणी मारवणी वर्षा ऋतु में रतपंखिये, निलपंखिये, बाबहिये को नानाप्रकार के उपालंभ और 'पिउ मेरा म्हूं पिउ की, तू पिउ कह इस कुण' कहकर उसे उसकी चोंच कटवाने की धमकी देती है। राजस्थानी लोकगीतों में भी 'म्हारे घरे नहिं भरतार, पपहिया वैरी ना बोलो' जैसे गीतों में विरहिणियों ने वैरी पपहियों की खूब लहरें ली हैं। अपने प्राणप्यारे से मिलने की अत्यंत व्याकुलता लिए वह कुररी पक्षियों के पास जाती है और उन्हें सम्बोधन कर कहती है- हे कुंभों! यदि तुम अपने पंख मुझे देदो तो मैं तुम्हारा बाना बनाकर सागर लांघ अपने पियू से मिल आऊं और लौटने पर तुम्हारी पांखें पुन: तुम्हें लौटादूं।

कुंभा द्यउ नह पंखड़ी, थांकउ बिनउ बहेसि।
सायर लांघी प्री मिलउं, प्री मिलि पाछी देसि।।

इस पर कुरजां कहती है कि हम तो बिचारी कुरजें हैं बहिन! मुख से तो संदेशा कह सकती नहीं, यदि तुम्हें अपने पति को संदेशा भेजना ही हो तो तुम हमारी पांखों पर लिखदो। मारवणी तो यह अच्छी प्रकार जानती है कि पांखों पर तो पानी गिर जाने से संदेशा धुल जायेगा और तिस पर मांगीतांगी पंखुड़ी से आखिर कबतक कितनी बार प्रियतम से मिल पाऊंगी क्योंकि प्रियतम तो विदेश में रहते हैं और बीच में बहुत से पहाड़ और जंगल जो हैं।

अंत में वह कौए को प्रियतम से मिलादेने पर अपना कलेजा देने के लिए कहती है। राजस्थानी लोकगीतों में भी विरहिणियों ने 'उड़ उड़ रे म्हारा काला रे कागला' तथा 'जे थूं उड़ ने सुण बतावे, थारा जलम-जलम गुण गाऊं' कहकर कौओं से पियू के आगमन के शकुन लेने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

एकदिन उमा देवड़ी ने पिंगल राजा से मारवणी की विरहकथा कह सुनाई। पिंगल ने प्रतिदिन नये-नये सांढनी सवारों को ढोला को बुलाने के लिए भेजे परन्तु कोई भी पुन: लौटकर नहीं आया। अंत में एक सौदागर राजा पिंगल को उसके द्वारा भेजे आदमियों को मार्ग में ही मारवणी द्वारा मरवा डालने के समाचार देता है। यह सोचकर राजा ढाढ़ियों के साथ संदेश भेजता है। ढाढ़ी लोग 'जउ जीव्या तउ आविस्या मुया त उणिहिज देर' कहकर पथिक-भेष में रात्रि को चल देने की तैयारी करते हैं।

मारवणी ने मारू राग में ढाढ़ियों को संदेश के दोहे लिखा दिये जो इस प्रकार थे-

ढाढ़ी एक सन्देसड़उ, प्रीतम कहिया जाय।
साधण बलि कुइला भई, भसम ढूंढ़ो आय।।
(प्रेयसी जलकर कोयला होगई। आकर उसकी भस्म ढूंढ़ो।)
जोबण हस्ती मद चढ़यउ, अन्कुसलइ घरि आई
(यौवन रूपी हाथी मदोन्मत हो गया है। अंकुश लेकर आओ।)
जोबण आंबउ फलि रहयउ, साखन खाअउ आई
(यौवन रूपी आम्र फल रहा है। उसकी फसल क्यों नहीं खाते?)
जोबन छत्र उपाड़ियउ, राजन बइसउ कोई
(यौवन ने छत्र उठाया है। छाया में आकर क्यों नहीं बैठते?)

राजस्थानी लोकगीत पीपली में भी ऐसे ही भाव मिलते हैं-

बाय चाल्या छा भंवरजी पीपलजी हांजी होए गई घेर घुमेर
कण पाकउ, करसण हुअउ, भोग लियउ धरि आई
(अन्न पक गया। आकर अपना भोग लो।)
जोबण फट्टि तलावड़ी, पालिन बंधउ कांइ
(यौवन रूपी तलैया फूट चली है। आकर पाल नहीं बांधोगे?)
जोबण बंधण तोड़ देगा, आकर बंधन डालो
(यौवन बंधन तोड़ देगा। आकर बंधन डालो।)
जोबण खीर समुन्द हुई, रतनज काढ़ई आई
(यौवन क्षीरसागर होरहा है। आकर रत्न तो निकालो।)
धण कणयर री कंबजउ, सूकी तोई सुरत्त
(प्रेयसी तुम्हारी याद में कनेर की छड़ी की सूख गई है।)

रात-रात भर रोते-रोते आंखों में इतनी अश्रुधार प्रवाहित हुई कि चीर निचोते-निचोते हथेलियों में छाले पड़गए तथा 'काग उड़ाइ-उड़ाइ बांहड़ियां बथकियां' होगई हैं। दिन-दिन यौवन और शरीर गल रहा है। विदेश में कौनसे लाभ प्राप्त करोगे प्रियतम! राजस्थानी लोकगीतों में भी 'एक टका री पिया नौकरी रे सवा लाखेणी घर री नार' दृष्टव्य है।

ढाढ़ियों के सन्देश सुन ढोला मारवणी से मिलने के लिए अत्यंत ही आतुर होउठा। मालवणी नानाप्रकार से ढोला को वहां जाने से रोकती है और कहती है कि स्वामी! मेरे करोड़ों उपाय करने पर भी तुम नहीं रूक रहे हो, हो-न-हो या तो कोई अन्य सुंदरी आपके मन में बसी हुई है या आप हमसे काफी नाराज होगए हैं। अंत में ढोला स्पष्टतया उससे मारवणी से मिलने की बात कहदेता है। मालवणी अनेक बहानेबाजी बनाती है। श्रावण आने पर वह कहती है-

सावण आयउ साहिबा, पगइ विलूंबी गार।
ब्रच्छ विलूंबी बेलड़ियां, नरां विलूंबी नार।।

शीतकाल में शीत पड़ता है। ग्राष्म में लू तथा वर्षा में भूमि कीचड़ से चिकनी रहती है। अत: आपके जाने के लिए कोई भी ऋतु उपयुक्त नहीं लगती। आखिर ढोला न माना और एक दिन अपार सिणगार करके 'अस्यांतउ मिलस्यांवले' कहकर नटवर कोट को जुहार करके मारवणी से मिलने के लिए चल पड़ता है। मालवणी अत्यंत व्याकुल हो उठती है। पालकी उसे सांप जैसी तथा महल श्मशान जैसे लगने लगते हैं।

उसने काजल, तांबूल तथा तिलक तीनों ही त्याग दिये हैं। प्रियतम के बिना उसका लाखों का मोलवाला आंगन कौड़ी के मोल का भी नहीं रह गया है। वह ढोले से पुन: लौटने का आग्रह करने के लिए सुग्गे को भेजती है। सुग्गा जब ढोले को मालवणी के मर जाने की बात कहता है तो ढोला उसे नौ मन चंदन तथा एक मन अगरू लेकर उसका दाहकर्म करने की बात कहकर उसे लौटा देता है।

रास्ते में ढोले को ऊमर सूमरे का एक चारण मिलता है जो मारवणी के वृद्ध होने की गलत सूचना देकर उसे धोखा देना चाहता है परन्तु ढोला उसकी बातों से जरा भी विचलित नहीं हो पाता है और अंत में बीसू चारण से पूछने पर वह मारवणी के रूप का सही बखान करता है-

गति गंगा, मति सरस्वती, सीता सील सुमाइ।
महिलां सरहर मारूइ, अवरन दूजी काइ।।
नमणी खमणी बहुगुणी, सुकोमली जुसु कच्छ।
गोरी गंगा नरज्यूं मन गरवी तन अच्छ।।

जैसे-तैसे ढोला पहुंचता है। दोनों का आंनदमय मिलन होता है।

मन मिलिया, तन गड्डिया, दोहग दूरी गयाह।
सज्जण पाणी खीरज्यूं खिल्लो खिल्ल थयाह।।

राजस्थानी लोकगीतों में भी -

साजण आया हे सखि, ज्यांरी जोई बाट।
घर नाच्या थांबा हंस्या, खेलण लागी खाट।।

रात को ढोला मारवणी को नानाप्रकार के प्रश्न पूछता है। मारवणी उनका उत्तर देती है। पन्द्रह दिनों तक ढोला सुसराल में बड़े ठाटबाट से रहता है और अंत में मारवणी का गौना करके राजा पिंगल ने बहुत से स्वर्ण जड़ित शृंगार, अच्छे दो हस्ती-घोड़े और बहुत सी दासियां देकर अत्यंत आनंद एवं उत्साह के साथ ढोला को नरवर की ओर प्रस्थान किया।

रास्ते में पाण सांप द्वारा मारवणी अचेत हो जाती है परन्तु उसी वक्त उधर से आते हुए योगी के मंत्र द्वारा वह सचेत हो जाती है। ऊमर उनका पीछा करता है मगर हार खाकर हैरान हो जाता है। ढोला खुशी-खुशी नरवर पहुंचता है। नारियां मंगल गीत गाती हैं। सारा नगर हर्षित हो उठता है। मारवणी तथा मालवणी (ढोला के बादवाली पत्नी) दोनों एक-दूसरे की निंदा तथा अपने-अपने देश की प्रशंसा करती हैं। अंत में ढोला भी मारवाड़ की अत्यंत प्रशंसा करता है और आनंद के साथ अपना शेष जीवन व्यतीत करता है।

कहना न होगा कि ढोलामारू का यह प्रेमाख्यान राजस्थानी लोकजीवन में रामदेवजी के 'खम्मा खम्मा खम्मा रे कंवर अजमाल रा' की तरह इतना घुलमिल गया है कि पुरुष को 'ढोला' तथा औरत को 'मारवण' नाम से संबोधित किया जाने लगगया। ढोलामारू पर कई ख्याल लेखकों ने ख्यालों की रचना कर उनकी कीर्ति में चार चांद लगा दिये हैं जिनकी त्योत्स्ना में अवगाहन कर हर रसिक सहृदय अपने आपको धन्य मानने लगा।

-(इकराम राजस्थानी के निदेशकत्व में आकाशवाणी जयपुर से राज्यव्यापी सांगीतिक प्रसारण)

पोथीखाना

फूल-फल देनेवाला पौधा जम्बूस्वामी

'महावैरागी श्री जम्बूस्वामी' गणधर सुधर्मास्वामी के शिष्य थे। सौलह वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। अपने माता-पिता के अति आग्रह को उन्होंने शिरोधार्य कर आठ विवाह किये पर प्रथम रात्रि, सुहागतरात के दिन ही वे वैरागी बन गये। उनके दृढ़ मनोबल और त्यागमय माधुर्य का ही चमत्कार रहा कि उन आठों श्रेष्ठि पुत्रियों ने भी संयम का मार्ग धारण कर लिया।

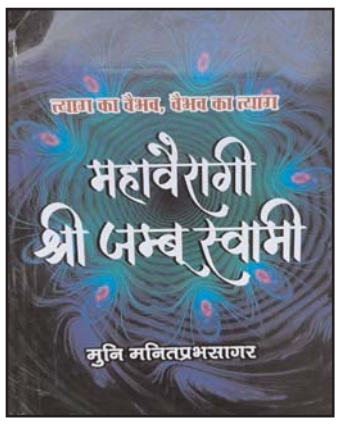

लेखक मुनि मनितप्रभसागर ने अपने त्यागी वैरागी जीवन की अनुभूतियों में डूबकर जम्बूस्वामी पर उनके व्यक्तित्व का जो वर्णन किया वह अपनेआप में बड़ा अनूठा बन पड़ा है। कुल 200 पृष्ठीय यह पुस्तक 54 शीर्षकों में जम्बूस्वामी के चरित्र को बड़े संयत से वर्णित करती है। लेखन शैली में काव्यात्मक लय माधुर्य और भाषा लालित्य पाठक को रसामृत दिये रहता है। लिखा है- जम्बूस्वामी जिनशासन के वह कल्पवृक्ष हैं जिसका वर्णन करना असम्भव है। गुलाब के पौधे पर केवल फूल आते हैं पर जम्बू एक ऐसा पौधा है जो फूल और फल दोनों से खिलता है। फूल देता है सुवास और फल देता है मिठास। जम्बू स्वामी के चरित्र में उपदेश की सुवास भी है और आचरण की मिठास भी।

उनके पास थी तालोद्घाटिनी विद्या एवं अवस्वापिनी विद्या। अवस्वापिनी निद्रा से वे किसी को भी जब चाहें तब गाढ़ निद्रा में सुला सकते थे और तालोद्घाटिनी विद्या से बिना चाबी के किसी भी ताले को खोल सकते थे।

-(पृष्ठ 93)

संघ नायक श्री जम्बूस्वामी ने जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में केवली बनने का यश पाया। उन्होंने 44 वर्षों तक युगप्रधान पद को गौरवान्वित किया। 64 वर्षों तक संयम का उत्कृष्ट पालन किया। वीर निर्वाण के 64 वर्ष बीतने पर अर्थात् 80 वर्ष की उम्र में उस चरम केवली परम वैरागी ने निर्वाण की अपूर्व सम्पदा प्राप्त की। -(पृष्ठ 177)

श्री जिनक्रान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला-343042, जिला जालोर से प्रकाशित इसका मूल्य 50 रूपया है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

अनेक पक्षों में 'राजस्थानी लोकनाट्य विज्ञान'

लोकनाट्य संसार में अतीत के प्रसंगों को अपनों के बीच अपने ही ढंग से दोहराने के माध्यम हैं और बहाने भी। नाट्यशास्त्र के आरम्भ में भरत अपना मत वेद की अपेक्षा लोकवृत्त से आरम्भ करते हैं और सम्पूर्ण शास्त्र के 37 अध्यायों तक लोक की प्रतिष्ठा और सम्मान का ही अनुवर्तन करते हैं। मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, विष्णुधर्मोत्तर जैसे पुराण और नंदिकेश्वर, शार्डदेव, सोमेश्वर आदि से लेकर सागर नंदि तक नाटकों के आश्रय, अनुसरण और आधार के लिए लोक को मुख्य माना गया है।

लोकनाट्य पर प्रसिद्ध विद्वान बी. एल. माली 'अशान्त' की पुस्तक आई है 'राजस्थानी लोकनाट्य विज्ञान'। कुल 125 पन्ने और नौ अध्याय हैं। राजस्थानी भाषा में लिखित इस पुस्तक के स्रोत मूलत: हिन्दी, संस्कृत, गुजराती और ब्रज भाषा के हैं अत: पारिभाषिक शब्दों और उदाहरणों के लिए इन भाषाओं पर निर्भरता बनीरही है। यह सम्भव भी है और कठिनता इस बात की भी है कि राजस्थान में इस तकनीकी विषय पर स्रोत-सन्दर्भ का अभाव भी है। वैसे राजस्थानी चित्रकला में रामायण, मालती माधव, महाभारत के अनेक प्रसंगों पर चित्र बने हैं और उनमें सम्वाद-प्रस्तुति के स्तर पर नाट्यशास्त्रीय शब्द आए हैं लेकिन प्रकाशन से दूर हैं और अन्त: अनुशासन को देखना टेढ़ा काम है।

लेखक ने लोक का रूप परिभाषित किया है (पृ. 7, 11) और इसका स्वरूप लौकिक आर्य स्वरूप बताया है। लोकरंग और उसका आदि रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है और नाटक को लोकनाट्य का विकसित रूप कहा है। भरताचार्य लोक को ही नियमित करते हुए शास्त्रीय स्वरूप में लोक की रीति का रस मानते हैं। सागरनंदि, महाराणा कुंभा, भरतभाष्यकार अभिनय दर्पणकार भी यही मानते हैं कि प्रस्तुतिमूलक कलाएं लोक की लोक के लिए होती हैं।

दूसरे अध्याय में वह लोकनाट्य को लोक का दर्शन कहते हैं और विषय प्रवर्तन करते हैं (पृ. 11-12) तथा इसी क्रम में डॉ. महेन्द्र भानावत की परिभाषा देते हैं। इसके बाद लोकनाट्य की विशेषताएं, रूप में कुचामणी ख्याल, शेखावाटी ख्याल, जयपुरी शैली, तुर्राकलंगी के ख्याल, तमाशा, स्वांग, रासलीला, रामलीला आदि को रेखांकित करते हैं। इनके विभिन्न क्षेत्रीय कलाकारों के दलों का उल्लेख एक तरह से दस्तावेज का काम करता है- उपयोगी और शोधपूर्ण भी। (पृ. 15-18)

लोकनाट्य की प्रकृति, शिल्प आत्मा और लोक रंगमंच जैसे बिन्दुओं में लोकनाट्य के विषयों को विश्लेषित कियागया है। लोकनाट्य के रूप विधान विषय में सीमित शब्दों में अपनी बात कही है जबकि भरताचार्य सर्वत्र इस बारे में कहते हैं। लोकरंगमंच की संरचना विषयक अध्याय में राजस्थान की मौलिकता को रेखांकित करतेहुए लेखक ने टोलीदार, खेल, पद्य सम्वाद रचना और बोल, खिलदार कला, खिलदार-खिलाड़ी, पौसाक, रूप बणाव, साज संगीत, मंच रूप, खेल रूप-स्थायी ठावापाज, खेल के प्रभाव की पहचान और लोकापेक्षित रूप-अर्थरूप चिन्तन जैसे 11 विषयों को बताया है।

ये सभी विषय ज्यादा पुराने नहीं हैं। पुराने समय में एक अलग परिवेश था। 'मालती माधव' के चित्रांकन में यह सब रूप केवल चित्रांकन से समझे जा सकते हैं। फिर 'गवरी' जैसी नृत्य-नाट्य परम्परा में 40 से अधिक खेल उन प्रबन्धों से मेल खाते हैं जिनको आचार्य मेरुतुंग ने 1304 ई. में बढ़वाण में संकलित किया है। लेखक ने माना है कि ऐसे नाटक छपे नहीं, लिखेगए और मंचित हुए।

अनेक पक्ष हैं। यह कृति अपने में अनेक बातों, तथ्यों को संजोये हुए है और पठनीय व संग्रहणीय है।

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगून'

मुनि मनितप्रभसागर लिखित दो कृतियां

करुणानिधान 142 पृष्ठीय जेबी संस्करण भक्ति-भजनों की अभिनव पुस्तिका है। इसके स्तुति विभाग में 8, चैत्यवंदन में 25, स्तवन विभाग में 96, गुरु गौतम वंदना में 15 तथा दादा देवगुरु भक्ति विषयक 6 स्तुति वन्दनाओं का संग्रह है। प्रत्येक रचना में रचनाकार मनितप्रभसागर की छाप मिलती है। सभी भजन भक्ति-संगीत से सराबोर हैं। मूल्य 40 रूपये है।

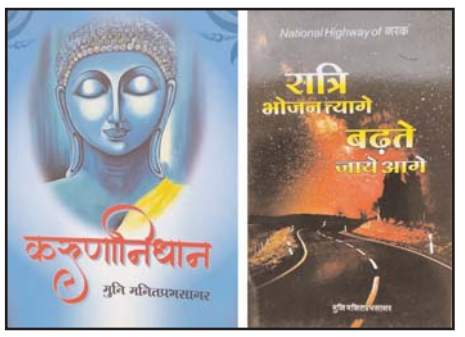

रात्रि भोजन त्यागे बढ़ते जाये आगे 47 पृष्ठीय 30 रूपये मोल की इस पुस्तिका में 24 शीर्षकों में रात्रि भोजन का सर्वप्रकारेण शास्त्र सम्मत निषेध बताते हुए अनेक हानियों, विकृतियों तथा विषमताओं का निर्देशन किया है। चन्द उदाहरण-

- भोजन में चींटी खाने से बुद्धि का नाश, जूं से जलोदर रोग, मक्खी से वमन, मकड़ी से कुष्ठ रोग, बिच्छु से तालु बिंध जाना, बाल से स्वर भंग हो जाता है। - (पृष्ठ 25) भोजन करना सहज घटना पर रात्रि भोजन दुर्घटना। -(पृष्ठ 28), एकांत में किया गया रात्रि भोजन पाप पर समूह में किया गया अपराध। -(पृष्ठ 31), हल्के आहार में पानी का स्थान प्रथम फिर फल। फल दिन के प्रथम प्रहर में लेना डाइमंड के समान, दूसरे प्रहर में गोल्डन, तीसरे प्रहर में सिल्वर, चौथे प्रहर में ब्रांस और उसके बाद लेना आइरन के समान है। -(पृष्ठ 34)

दोनों पुस्तकें श्री जिनक्रान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला-343042 जिला जालोर से प्रकाशित हैं।

- डॉ. कहानी भानावत

एक अछूते पर उपयोगी हस्तशिल्प 'पलाण' पर प्रामाणिक पुस्तक

यह अधिक सच है कि बिटिया डॉ. कहानी के माध्यम से चित्रकला के व्याख्याताओं से मेरा निकट का परिचय बना। डॉ. रघुनाथ भी कहानी के साथ नाथद्वारा महाविद्यालय में थे। उन्होंने 'पलाण' पुस्तक भी कहानी के हाथों ही मेरे पास भिजवाई। कोरोना के कारण वे संकोचवश ही मुझसे नहीं मिल सके।

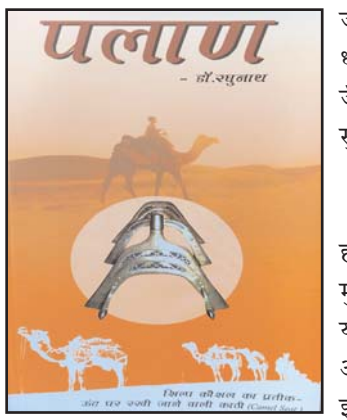

मैं 'पलाण' देखते ही चौंका और अचरज हुआ कि डॉ. रघुनाथ को मैं केवल एक चित्रकार के रूप में ही जानता था। वे एक सधे हुए लेखक भी हैं, यह पहलीबार 'पलाण' पढ़कर ही जाना। जानता यह भी था कि चित्रकार अपने द्वारा चित्रांकन तो अच्छा कर सकते हैं पर उसे मुंह बोलती वाणी देकर सटीक वर्णन-विश्लेषण नहीं करते।

अचरज यह भी हुआ कि डॉ. रघुनाथ जैसलमेर के ग्राम निवासी हैं जहां रेगिस्तानी भाग ही है और ऊंट वहां रेगिस्तान का जहाज नाम से ख्यात है। यह राजस्थान का प्रांतीय पशु भी घोषित है।

मेवाड़ क्षेत्र में ऊंट का उपयोग अधिकतर भारवाही के रूप में किया जाता है अत: उस पर माल ढोने के लिए बांस-लकड़ी की बनी कांठी का प्रयोग मिलता है। घोड़े पर 'जीण पलाण' शब्द प्रयुक्त होता है। पलाणता क्रियाा रूप में भी प्रयुक्त होता है। बावजी चतरसिंहजी ने अलख पच्चीसी में यह दोहा लिखा-

अबल घोड़ी ऊपरे, पचरंग मंड्यो पलाण।
वीं पै अधर सवार है, उद्या अलख पछाण।।

डॉ. रघुनाथजी ने विविध ग्रंथों तथा पत्र-पत्रिकाओं का हवाला देते 98 पृष्ठों में आर्ट पेपर पर बड़े कलात्मक रंग-बिरंगी चित्रों के साथ अपने वर्णन-विश्लेषण को पलाण से सन्दर्भित अनेक जानकारियों से समृद्ध किया है। वानगी के तौर पर कुछ अंश-

(अ) उत्तम कारीगरी का प्रतीक पलाण लकड़ी की वह काठी होता है जिस पर पीतल या लोहे की परतें चढ़ाकर मजबूती प्रदान की जाकर पतरों पर मेहनत और कारीगरी से बेलबूटे आदि उकेरे जाते हैं। कारीगरों और ग्राहाकें ने जितना उसकी मजबूती पर ध्यान रखा उतना ही इसके शिल्प-सौन्दर्य पर ध्यान दिया है। जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर जिलों के गिने चुने गांवों में रहने वाले सुथार जाति के लोगों द्वारा पीढ़ियों से पलाण बनाये जाते रहे हैं। -(पृष्ठ 10-11)

(ब) आजादी से पूर्व जैसलमेर एक प्रमुख व्यापारिक मार्ग होने के कारण एक बड़ी मण्डी भी हुआ करता था। सिंध, मुल्तान, सक्खर, गुजरात, मध्यभारत, उत्तरी भाग आदि के लिए यहां के ऊंटों के कई काफिले गुजरते थे। यूरोप, मध्य एशिया आदि देशों से आने वाले व्यापारी, पर्यटक, धार्मिक यात्री आदि इसी रूट का प्रयोग करते थे तब पलाण भी उसी अनुपात में बना करते थे। - (पृष्ठ 11)

(स) लेखक ने 60 वर्ष पूर्व अपने गांव कानोई के हर सुथार परिवार में बड़ी मुस्तैदी से पलाण बनते देखे हैं। पूछने पर 80-90 वर्ष की अवस्था लिए नखतूराम, हुकमाराम, रामचन्द्रराम, चांनणराम ने बताया कि उनके बाप-दादा भी यही कार्य किया करते थे। वर्तमान में यहां के बसे मुम्बई, पूना में भी थोक में पलाण बनाते हैं। -(पृष्ठ 31)

पुस्तक में पलाण निर्माण में प्रयुक्त सामग्री, औजार, सज्जा प्रकार, पलाण की विविध किस्म, निर्माण सम्बन्धी समस्त प्रक्रिया, बिक्री बाजार, वर्तमान स्थिति, समस्या और चुनौतियों पर भी सम्यक् प्रकाश डालकर हस्तशिल्प कला के महत्व को प्रतिपादित किया है। पुस्तक का मूल्य 300 रूपया है। सम्पर्क सुविधा लेखकीय मो. नं. 9414757941 है। **- म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (121) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मांडू में सिंहासन बत्तीसी की खोज

इतिहास को तोड़ मरोड़कर उसे अपने अन्दाज से प्रस्तुत करने की हमारी आदत बहुत पुरानी है। बड़ेरों ने जो कुछ लिख दिया, उसे उसी रूप में स्वीकार कर 'बड़ो हुकुम' कहनेवालों ने बड़ा अनर्थ भी किया। नतीजा यह हुआ कि बहुत सारा असली इतिहास इति बनकर रहगया और उसका हास किंवा ह्रास ही अधिक हुआ।

इस झमेले में सर्वाधिक लू पुराने खण्डहरों, महलों, हवेलियों को लगी। इसीलिए ये हमें बड़े रहस्य-रोमांचभरे अजूबे और अद्‌भुत तो लगते हैं पर सही जानकारी के अभाव में भ्रमित करते और भटकन देते भी लगते हैं।

इतिहास जहां मौन होता है, लोकसंस्कृति वहां मुखरित होती है। लोकसंस्कृति का इतिहास किसी काल-अकाल का हनन नहीं होता। उसकी लिखावट किन्हीं पट्टों, परवानों, ताम्रपत्रों और शिलालेखों पर नहीं होकर लोक के हिये पर होती है। गाथाओं तथा कथावार्ताओं द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी, कण्ठ-दर-कण्ठ जो कथा, किस्से लोक की जबर्दस्त धरोहर और जीवनधर्मी सांस्कृतिक सरोकार बने हुए हैं क्या वह इतिहास नहीं है? संस्कृति नहीं है? यह लोक का इतिहास मात्र पढ़ने या देखने की वस्तु नहीं होता।

उसके साथ कई काल और शताब्दियों के लोकमानस की जीवन-गंगा प्रवाहित होती मिलती है। स्वर, ताल, लय और नृत्य-नाट्य की लोकानुरंजनकारी यह विरासत किसी की वैयक्तिक थाती नहीं होती। पूरा देश-काल-समाज उसके साथ जुड़ा होता है। वह सर्वजन की, सर्वकाल की प्राचीन होती हुई भी नित नवीन लगने वाली होती है इसीलिए वह शाश्वत है। मांडू की धरती का भी कुछ ऐसा ही वैभव है।

मांडू की धरती बहुत-बहुत पुरानी है। यहां एक-एक कर 67 राजा हुए। 61 तो हिन्दू राजा ही हुए। मुसलमान तो बहुत बाद में आए। अकबर यहां संवत् 1732 में लड़ने आया था। यह 200 वर्ष से अधिक जीवित रहा। मांडू को मंदू ने बसाया। इन्हीं के नाम पर इसका मांडू नामकरण हुआ।

नंदूजी पाताल के राजा थे। ये कृष्ण से भी पहले हुए। पहले उन्होंने जोधपुर के पास मण्डोवर बसाया। यहीं रावण ने उनकी लड़की मंदोदरी से विवाह किया था। रावण जब अभिमानी बनगया और मंदूजी पर ही अपना आधिपत्य जमाने लगा तब मंदूजी ने वैसा करने की बजाय मण्डोवर ही छोड़दिया और मांडू आगए। यहां तथाकथित बाजबहादुर का महल मंदूजी ने ही बनवाया। मंदूजी 411 हजार बरस के जीव थे।

पहले ये नाग थे। नाग से नर बने। बलदेव, लक्ष्मण और कृष्ण भी पहले नाग थे। नाग की उम्र एक हजार बरस की होती है। पांच सौ बरस के बाद उनमें पंख आने शुरू होते हैं। नाग सदा ही जहर लिये होते हैं जबकि सांप विष विहीन होते हैं।

मंदूजी बड़े दानी थे। उनके पास एक-एक लाख गायें रहती थीं। हजार-हजार गायों का तो वे दान करते थे। घोड़े भी उनके पास कई थे। दान से तप बढ़ता है। तप से तेज चलता है। तेज से लक्ष्मी फलित होती है। कर्ण भी ऐसे ही दानी थे। वे स्वर्ण दान करते तो उनके पास अच्छे-अच्छे राजा और ठाकुर तक भिखारी बन दान लेने आते। दान कभी निष्फल नहीं जाता।

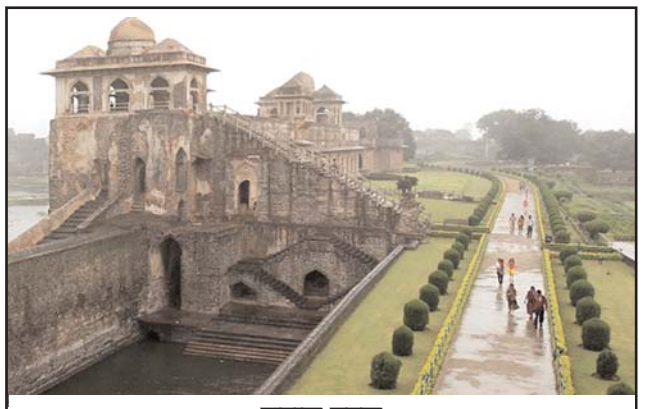

जहाज महल

मांडू में तब 12 रूपया मन घी था। तब मन्दिरों में लोग घी चढ़ाते। घी चढ़ाने की बोली भी लगती और बोलमा भी होती। दस मन से लेकर पच्चीस मन तक तो अमूमन कोई भी घी चढ़ाता। आज भी चढ़ानेवाले बिना किसी खोज-खबर के चुपचाप मनोबन्ध घी चढ़ाते हैं। पहले मांडू में राजा ही रहते थे। यह धार तक फैला हुआ था।

इसी मांडू में राजा विक्रमादित्य तपे। ये और भी कई जगह तपे। वहां भी तपे जहां तांबावती नगरी बसाई गई। इसी तांबावती में महाकालेश्वर का प्रादुर्भाव हुआ। एक समय तांबावती में जल नहीं बरसा। तब सभी लोगों ने सामूहिक उजैणी की। समूहभोज में शिवजी से अरजी की कि पानी बिना सब कुछ नष्ट हुआ जारहा है। शिवजी रीझे। पानी बरसा। हाय-हाय मिटी। अकाल-दुष्काल से छुटकारा मिला तब सबने मिलकर महाकालेश्वर की स्थापना की और उजैणी नाम दिया। वही उजैणी आज का उज्जैन बना हुआ है।

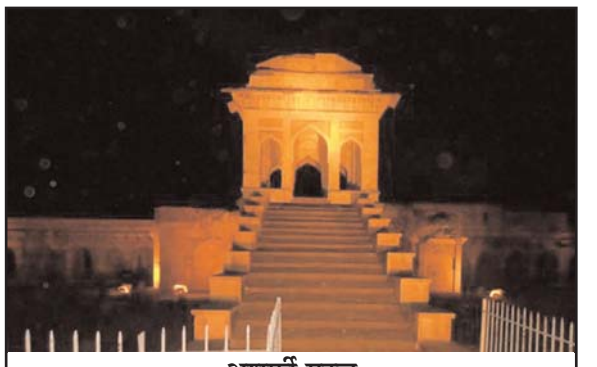

अशर्फी महल

मण्डोवर देखने के बाद यह इच्छा बलवती होगई कि मांडू अवश्य देखना चाहिये। दोनों महानगरों की स्थापत्यकला और सांस्कृतिक वैभव उस समय के जीवनधर्म और सांस्कृतिक परिवेश की पारदर्शियां देते हैं। तब से अब तक कई सत्ता-पुरुष आये और गये। राजे बदले। महाराजे बदले।

राज्य बदले। संस्कृति बदली। धर्म बदला। आक्रमण, अत्याचार, दमन, अनाचार सब कुछ हुए। कई असली नकली हुए और नकली असली बन बैठे मगर धरती तो वहीं की वहीं रही। उसकी मूल गंध तो आज भी देखी-पहचानी जा सकती है पर कौन अध्ययन-अन्वेषण और परख-पहचान कर पाता है?

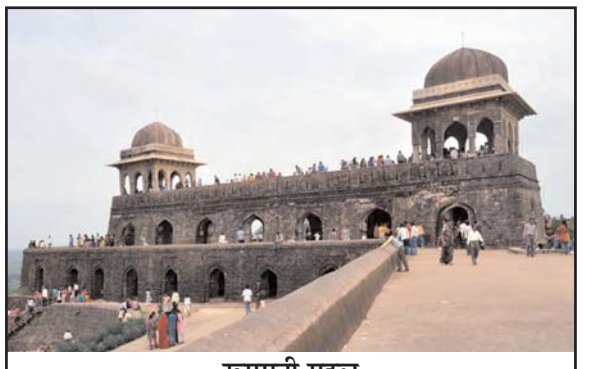

रूपमती महल

मांडू के बहुत से महल-खण्डहर आज भी अबोले हैं। जिन नामों से ये पहचान दिये जारहे हैं, वह थोपी कहानी है। मूल इतिहास, किस्से, कहानी, कथन कुछ और ही हैं। समय जो बलवान बनकर आता है वह सबकी छाती पर चढ़कर अपना शौर्य स्थापित कर देता है। ऐसी स्थिति में सत्य जितना चमकदार होता है उतना ही धुंधला दिया जाता है। **आज तो सबके सब महलों-खण्डहरों पर मुगल संस्कृति का मुलम्मा चढ़ा हुआ है। अशर्फीमहल, हिंडोलामहल, जहाजमहल, रूपमतीमहल, दाईमहल, लोहानीद्वार, होशंगशाह का मकबरा सबके सब असलीयत से कोसों दूर हैं। किसी समय यहां नौ लाख जैनी और सात सौ के करीब जैन मन्दिर थे। आज सारे मन्दिर मस्जिद बने हुए हैं।**

05 नवम्बर 1985 को पहलीबार मांडू की माटी का स्पर्श किया। साथ में थे लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के अनन्य सेवक सरजुदासजी और डॉ. सुधा गुप्ता। मण्डोवर में भी हमारा यही साथ था। मांडू घूमते सहज ही में एक गाइड मिलगया जिसने अपने को आदिम कहा। वह आदिम, आदिवासी ही था। वह आधुनिक गाइड नहीं था।

उसी धरती का जाया जन्मा था। यहीं उसकी तीन-चार पीढ़ियां गुजरी थीं। ज्यादा भी गुजरी होंगी। उसने हमें वे सारे महल-खण्डहर दिखाये। उनके रहस्य-रोमांच भरे अन्तर किस्से बताये। हम चुपचाप उन्हें सुन अपनी आंखें विस्फारित कर चारोंओर निहारते रहे। खण्डहरों की अन्तर्ध्वनियों में अपने अन्तर को गूंजाते रहे। चकछक होतेरहे।

यह बड़ा अचरज ही रहा कि 'लोहानीद्वार' के नाम से यहां कोई द्वार नहीं है बल्कि वे तो गुफाएं हैं, पाण्डवों की गुफाएं। पाण्डवों ने ही इन्हें बनाई। यहीं उन्होंने अज्ञातवास किया था। भील-मीणे बनकर रहे थे। कुंती भी उनके साथ रही। पानी गुफाओं में भी रिस रहा है। नीलम के पहाड़ तोड़-फोड़ कर कैसे कितनी मेहनत से गुफाएं बनाई होंगी! कितना समय लगा होगा! कितनी सख्त और ठोस गुफाएं हैं ये! और आसपास फैले पहाड़! नीचे निर्जन वन घना गहरा। पहाड़ में पत्थर फोड़कर उगते केल वृक्ष। कौन देखता है उन्हें यहां? कौन पानी देता है? पाण्डवों की तपस्या और यज्ञ का फल समझिये कि आज भी यह भूमि अपने तप का फल दे रही है।

पांडू के साथ कुंती हमेशा ही रही। तब मांडू की बस्ती इन गुफाओं से दूर थी। गांधारी के पति धृतराष्ट्र अकाल मौत मरे। पांडू फिर हिमालय गलने चलेगये। वहां जाकर चोलाबदल लिया। अब जो हिममानव कहलाते हैं, वे ये ही पाण्डव हैं। द्रोपदी भी उनके साथ है। सब अभी भी तपस्यारत हैं। ये संत हैं।

संत दस-दस हजार बरस की तपस्या करते हैं। फिर इन पाण्डवों को तो अभी ढाई हजार बरस मात्र हुए हैं। ये पाण्डव हवाभक्षी हैं। फल खाते हैं। पाप से सदा दूर रहते हैं। हिमालय में तो सदा ही पापनाशिनी गंगा का प्रवाह है। प्रायश्चित के लिए वे वहां गये तो अमर होगए।

ये हिममानव ग्यारह-साढ़ा ग्यारह हाथ के हैं। इनकी वाणी तब की ही वाणी है जिसे कोई आज का मनुज नहीं सुन सकता। पाप की छाया तक उन्हें नहीं लग पाये इसलिये वे मनुष्य से सदा दूर रहते हैं और उसे देखते ही भाग जाते हैं। ऐसे संत हमारे देश में अन्यत्र भी तप रहे हैं। राजस्थान में बांसवाड़ा के पहाड़ों में कोई तीन हजार बरस पुराना संत ऐसा है जिसके एक टांग ऊंट की और एक टांग मानव की है।

मांडू में गुफाओं के पास एक लौहखंभ जमीं में गड़ा हुआ है। यह खंभ आल्हा-ऊदल जब लड़ने आये तब अपने साथ लाये थे। इसके सहारे रस्सा बांध तोपें ऊपर चढ़ाई गई थीं। ऐसे नौ खंभ यहां और लायेगये।

ये महुवा से लायेगए। गुफाओं के ऊपर का पूरा भाग खण्डहरों का वैभव लिये है। यहां एक सरकारी बंगला बनाया गया जो ज्यों-ज्यों बनता रहा, उजड़ता रहा। यहां यह भी सुना गया कि कोई अदृश्य आत्मा ऐसी है जो कुछ भी होने नहीं देती है।

मांडू का सर्वाधिक आकर्षण बाजबहादुर और रूपमती के तथाकथित महल हैं। कहाजाता है कि दोनों का अनन्य प्रेम आज भी यहां वातानुकूलित है। रूपमती की संगीत-लहरी में सुधबुध खोया बाजबहादुर आज भी कई रसिकों को प्रणय में आकंठ डूबने का आलंबन दे जाता है।

बाजबहादुर के महल, चाहे वे जनाना हों या मरदाना; अपने स्थापत्य में कितने वैभव और विलक्षण पूर्ण रहे होंगे? उनके गोखड़े, कांच का काम और पच्चीकारी देख तबका शाहीजीवन और उससे जुड़ी कला-सांस्कृतिक रूचियों का पता लगाया जा सकता है।

पर बाजबहादुर कौन था? क्या था? किसने बनाया उसको बादशाह और किसने कहा नवाब? कहां थी रूपमती? किसकी रानी थी वह?

सच तो यह है कि न रूपमती रानी थी न बाजबहादुर बादशाह। रूपमती रूक्साना थी। राजपूत कन्या नहीं। उसका अपहरण कर लाया था जयपुर का नाहरसिंह। वह इतिहास प्रसिद्ध राजा मानसिंह का भाई था। जब जयपुर पर मुसलमानों ने आक्रमण किया और राजपूत बालकी को लेकर भागगये तो नाहरसिंह को गुस्सा आया फलस्वरूप वह एक मुसलमान कन्या का अपहरण कर मांडू चलागया। यही कन्या रूक्साना थी। नाहरसिंह ने ही तब नर्मदा व सूर्यदर्शन के लिए रूपमती का महल बनवाया था। मांडू तब उजड़ चुका था।

जयपुर से जो मुसलमान राजपूत बालकी को ले भागा, रूक्साना उस मुसलमान की बहिन थी। नाहरसिंह उस समय 63 वर्ष का था जबकि रूक्साना केवल 23 बरस की थी। नाहरसिंह की मृत्यु के बाद बाजबहादुर रूक्साना के सम्पर्क में आया और उसे हिन्दू कन्या घोषित कर उसका नाम रूफाळी करदिया। उस समय रूफाळी 60 बरस की थी।

नाहरसिंह की मृत्यु के बाद जब रूक्साना विधवा होगई तब उसने अपनी जाति के लोगों को बुलवाया। इस बुलावे में बाजबहादुर भी आया। दोनों के बीच प्रेम हो गया। उन्होंने गाय का मांस खाना शुरू कर दिया। जिन हिन्दुओं ने रूक्साना का साथ दिया वे मुसलमान होगये और जो साथ नहीं देना चाहते थे, वे भागते बने। इस प्रकार **इन मुसलमानों का उद्‌भव मूसल से हुआ। मूसल से मुसल्ल बना और मुसल्ल से होते-होते मुसलमान होगया।** बैलों के गले में जो खूंटी बांधी जाती है वह मूसल कहलाती है।

- शेष पृष्ठ सात पर

दो तुक्तक

(1)

सतयुग के रामेश्वर कलयुग में आये हैं।
अयोध्यावासियों ने सबको दिखाये हैं।
हम तो हुए हैं धन्य।
उमड़े भी तो हैं अन्य
पूरी दुनियां ने दीप घर-घर जलाये हैं।।

(2)

पार्टी चलानी है, मोदी को गाली दो।
पार्टी जितानी है, मोदी को गाली दो।।
मोदी गुड़धानी है।
बात बचकानी है।
जनता के हाथों में मोदी को ताली दो।।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 अप्रेल 2021

सम्पादकीय

नेताओं के बेलगाम बोल

नेता चाहे कोई भी हो, पुराना या नया। जवान अथवा उम्र ढलाव; उसे अपनी तथा अपने दल की गरिमा, प्रतिष्ठा तथा सामाजिक सरोकारों का पूरा-पूरा ख्याल रखना चाहिये। वह राजनीति में एक निश्चित सोच, समझ तथा नियमन को लेकर आया है। उसका सर्वोपरि लक्ष्य जनता जनार्दन का हित चिन्तन तथा सेवाभाव का है।

आजादी से पूर्व और उसके बाद तक के वर्षों में सभी नेताओं ने इस अनुशासन और मर्यादा का पालन किया। इस कारण वे आज भी अपने योगदान तथा सेवा प्रयोजन के लिए स्मरणीय बने हुए हैं।

लोकतंत्र में जन-गण-मन सर्वोपरि होता है। सारे अधिकार उसी के साथ, उसी के हाथ, उसी के लिए होते हैं। नेता केवल जनसेवक होता है। वह अस्थायी होता है। जनता पर निर्भर रहता है। जनता उसकी नियामक होती है। उसे सत्ता जनता सौंपती है। जनता ही उसके सिर पर विजय का सेहरा बांधती है और जनता ही उसके सिर पर हार का ठीकरा फोड़ती है।

यहां जनता की पसंदगी पर कोई नेता पावरफुल बना है तो किसी को पावरलेस बनाने में भी जनता ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है। जिस होशियारी से किसी नेता को जनता ने सर्वोच्च कमान सौंपी है तो समय आने पर उसकी नाकामी, नाजायज हरकतों तथा बेईमानी करतूतों से धूलचट्टा करने में भी देरी नहीं की है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' के आह्वान पर जनमंशा का प्रतिनिधित्व करते कवि की एक तान-हूंकार 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' पर जननायक जयप्रकाश नारायण जननारायण के रूप में सर्वमान्य हुए थे।

लेकिन बीते दशक-दो दशक के काल में जनप्रतिनिधि नेताओं ने वह काणकायदा नहीं रखा और अंटसंट जो मन में आया, तुका-बेतुका बोलकर अपनी छवि, मानमर्यादा तथा सम्मान को ठेस पहुंचाई है। इससे उसकी पार्टी भी जनता की नजरों में छोटी हुई है। उसे भी धक्का लगा है।

हमारे यहां कोई कहावत भी कई बार सत्य कहती नसीहत देती प्रतीत होती है। उससे भी हम बहुत कुछ सीख लेते सजग रह सकते हैं। कहावत है, तलवार के घाव तो समय रहते ठीक हो सकते हैं पर वाणी द्वारा कहे शब्द ऐसा घाव करते हैं जो अमिट होता है।

जब हमारे यहां हाथी जैसे जानवर को वश में करने के लिए अंकुश लगाने, शक्ति-सम्पन्न हॉर्स पॉवर के जिए प्रख्यात घोड़े की लगाम लगाने तथा कृषि के मुख्य मेरुदंड कहे जानेवाले बैल की नाक में नथनी देने की सुदृढ़ परंपरा है और हर सरकारी कर्मचारी के लिए उम्र का बंधन है तो नेता नामधारी पुरुष छुट्टा क्यों है ?

सब जानते हैं, ढलान आने पर हर चीज फिसलती है तो उम्र का ढलान तो सभी चीजों की फिसलन देती है। ऐसी स्थिति में उसके डाट लगाना भी परम आवश्यक है। इसपर गंभीरतापूर्वक सोच, चिंतन और मनन अपेक्षित है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज के विशिष्ट सम्मान

डॉ. 'जुगनू' को 5 लाख का गुरु गोरखनाथ सम्मान :

उदयपुर। डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' को आदिकालीन साहित्य में योगदान के लिए हिन्दुस्तान एकेडमी, प्रयागराज की ओर से गुरु गोरखनाथ शिखर सम्मान प्रदान किया जायेगा। एकेडमी के अध्यक्ष डॉ. उदयप्रतापसिंह के अनुसार सम्मान के तहत 5 लाख रूपये की राशि भी प्रदान की जायेगी। उल्लेखनीय है कि डॉ. जुगनू ने भारतीय लिपियों, संस्कृत, प्राकृत और पाली सहित कई क्षेत्रीय भाषाओं , आदिकालीन हिन्दी और मध्यकालीन कवियों के साहित्य का भी सम्पादन किया है। राष्ट्रपति की ओर से श्रेष्ठ शिक्षक से नवाजे जाने के साथ ही डॉ. जुगनू को वास्तु, ज्योतिष सहित कई क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान के लिए राजस्थान, गुजरात और पंजाब के राज्यपाल भी सम्मानित कर चुके हैं।

अन्य महत्वपूर्ण सम्मान :

इसके अलावा 5 लाख रूपये का गोस्वामी तुलसीदास सम्मान महेन्द्रप्रतापसिंह को, 4 लाख का संत कबीरदास सम्मान रामकिशोर शर्मा को, दो-दो लाख का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्मान डॉ. रामबोध पाण्डेय तथा महावीरप्रसार द्विवेदी सम्मान डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी को, एक-एक लाख का महादेवी वर्मा सम्मान डॉ. रतनकुमारी वर्मा, फिराक गोरखपुरी सम्मान डॉ. अंजनासिंह सेंगर, भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, बनादास अवधी सम्मान पवनकुमार सिंह, कुंभनदास ब्रजभाषा सम्मान अंजीव अंजुम तथा ईसुरी बुन्देली सम्मान डॉ. दया दीक्षित को दिया जायगा।

इसी प्रकार ग्यारह हजार के दो हिन्दुस्तानी एकेडमी युवा सम्मान काव्य विधा में शुभम श्रीवास्तव 'ओम' तथा कथा विधा में अनिलकुमार 'निलय' को प्रदान किया जायगा।

मीठेश निर्मोही का कविता संग्रह पुरस्कृत

बंगलौर। जोधपुर के मीठेश 'निर्मोही' को उनके काव्य-संग्रह 'मुगती' पर एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रूपये का 'मातुश्री क म ल ा गोइन्का राजस्थानी पुरस्कार' दिया जाएगा।

यह जानकारी गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने दी। उन्होंने बताया कि कोरोना के प्रकोप के चलते पुरस्कार राशि व स्मृति चिन्ह प्राप्ता को उनके पते पर भिजवा दी जाएगी। शब्द रंजन की बधाई।

बजरंग पांथी नहीं रहे

उदयपुर (वि.)। बूंदी निवासी दैनिक राजमार्ग के यशस्वी सम्पादक बजरंग पांथी का 29 मार्च को निधन हो गया। वे 85 वर्ष के थे। गीतकार किशन दाधीच ने कहा कि पांथी का नहीं रहना एक निर्भीक पत्रकार का अस्त होना है। उनके चले जाने से चेतावनी का एक बुलन्द स्वर नहीं रहा।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि वर्षों पहले पांथी उदयपुर में रहे। वह उनका शुरूआती समय था लेकिन तब भी वे अपने स्वाभिमानी मिजाज और स्वभाव की सब ओर पहचान देते रहे। यह वह समय था जब यहां से कोलाहल, जनमंगल, मार्शल, नवजीवन जैसे पत्र नियमित प्रकाशित होते थे। पांथी से डॉ. भानावत का अन्तिम समय तक विचार विनिमय रहा। उन्होंने हाल ही में अपना आत्मकथात्मक जीवन परिचय प्रकाशित किया जिससे पता चलता है कि उन्होंने पूरे जीवनभर अपने सांच की आंच को बनाये रखते उच्च अधिकारियों तक को बेनकाब करने का साहस दिखाया।

डॉ. कहानी भानावत ने कहा कि जब उनकी पहली पोस्टिंग बूंदी महाविद्यालय में हुई तो पांथीजी भानावत का नाम सुनकर ही मुझसे मिलने आये और जब तक वहां रही, अभिभावक के रूप में मुझे सम्बल देते रहे।

गांधीजी के बन्दर आज

गाँधीजी ने बैठाए थे तीन बंदर
बुरा मत देखो
बुरा मत सुनो
बुरा मत बोलो।
लेकिन अब गाँधी युग बदल गया।
वह सूरज तो कभी का ढल गया।
पर तीनों बंदर अभी भी मौजूद हैं

अभी भी उनका वही वजूद है
अब परिवेश बदल गया
बंदरों का संदेश हो गया-
कुछ मत देखो
कुछ मत सुनो
कुछ मत बोलो।
और सब देख सुनकर भी चुप हो लो।
याद रहे तुम पिंजरे में बंद
एक परकटे परिंदा हो
उड़ो लेकिन पिंजरे के भीतर
बने रहो मिट्ठू, कबूतर और तीतर
बाहर मत झांको
व्यर्थ की बातें मत हाँको
मिट्ठू की तरह रटाया बोलो
मालिक के कानों में
अमृत रस घोलो
हमेशा याद रखो कि तुम मनुष्य नहीं
फकत एक परिंदा हो
यह क्या कम बात है कि
बावजूद इसके भी
तुम अभी तक जिंदा हो।

- डॉ. पूरन सहगल

पाठकों के पत्र

सूखी सब्जी के प्रकरण में 'ओल्या'

शब्द रंजन के 01 मार्च के अंक में तुलसीदेवी द्वारा सूखी सब्जी बाबत जानकारी महत्त्वपूर्ण लगी। हरी सब्जी तो मौसमानुकूल होती है पर सूखी का स्वाद तो वर्ष भर ही लिया जा सकता है। याद पड़ता है, कपासन में जब मैं व्याख्याता था तब शीतला अष्टमी को हेतालुओं ने अपने घर आमंत्रित कर मुझे 'ओल्या' परोसा था। पहलीबार उसका स्वाद चखा जो अब भी बरकरार है।

जब सावा में हेडमास्टर था तब तो मुझे जबरन ही ओल्या खाना पड़ा। वहां की मनुहार का तो मैं अब भी कायल हूं। वहीं के कुछ परिवारों ने तो चरखी के दिनों में गन्ने का रस पीने पूरे स्कूली बच्चों तथा गुरुजनों तक को निमंत्रित कर छककर रस ही नहीं, काकब भी खिलाया था।

संवत्सरी पर बच्चे मिलकर गुरुजी सहित अभिभावकों के घर-घर जाकर दोनों हाथों में डंके (छड़ियां) आपस में टकराते लयबद्ध गान करते हैं-

'छमछड़ी भाई छमछड़ी /
लैसे घोड़ा लेसड़ी /
एक घोड़ो आरपार /
वींपे बैठा मियां माल /
मियां माल री काली टोपी /
काला है किसनजी /
हार्‌या है मगनजी /
रावजी नंगारो दीधो /
जित्या हड्डमानजी।'

अभिभावकों ने तब मेरा तहेदिल से स्वागत किया। छककर नाश्ता कराया। किसी ने साफा बंधवाया तो किसी ने मोठड़ा। किसी ने दो-दो रूपये दिये।

ऐसा करते उस दिन मेरे पास चालीस रूपये हो गये। सन् 1953 में उन रूपयों से मैंने पूरा बम्बई भ्रमण कर लिया। वैसी मनुहार और वैसा आतिथ्य, सत्कार अब स्वप्नवत हो गया पर ओल्या अब भी शीतला माता के दिन मेरे घर में बनता है।

- बनवारीदत्त जोशी, पूना

'ओल्या' शब्द पहलीबार जब मैं छोटीसादड़ी था तब सुना ही नहीं, गुरुकुल के मंत्री श्री चांदमलजी नाहर ने अपने निवास आमंत्रित कर खिलाया था। शब्द रंजन में पढ़कर उस काल सन् 1962 की पूरी स्मृतियां जाग्रत हो आईं।

यह शब्द पूरी संस्कृति का द्योतक है। हमारे इधर इसका रिवाज नहीं है। मेवाड़ में बहुत सारे सरोकार बड़े ही अनोखे हैं। यहां की संस्कृति ही नहीं, लोग भी बड़े सहृदय और स्नेही हैं। मैंने वहां रह बहुत कुछ पाया।

विपिनजी पर लिखा 'स्मृतियों के शिखर' बड़ा ही दिलचस्प है। इतनी जानकारी जान अच्छा लगा तब तो वे मेरे साथ गुरुकुल के साथी ही थे। शब्द रंजन प्रत्येक तरह की जानकारी से समर्थवान है। हर चीज मनोयोग से पढ़ता हूं और चकित भी होता हूं कि कैसे कहां-कहां से इतना सब संचित कर पाठकों को ताजगी दिये रहते हैं।

-प्रो. शांतिलाल बांठिया, इंदौर

अपना देश अपनी संस्कृति

'मसखरी' के उस्ताद भट्टजी

मसखरी में बूढ़ा दिल भी जवान हो जाता है मगर जो मसखरी में ही लगेपगे रहते हैं वे तो बूढ़े होते ही नहीं ; यह राजेन्द्रशंकर भट्ट ने भी अपने 91 वें वर्ष के अंतिम दिन 27 अगस्त 2010 को मुझे पत्र लिखकर सिद्ध कर दिया। भट्टजी ने सुखाड़िया शासन में लम्बे समय तक सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय में निदेशक के रूप में अपनी सुछवि से उस काल को ही स्वर्णिम बना दिया था। पत्रकार भट्टजी बाद में अच्छे सुनाम लेखक हो गये थे।

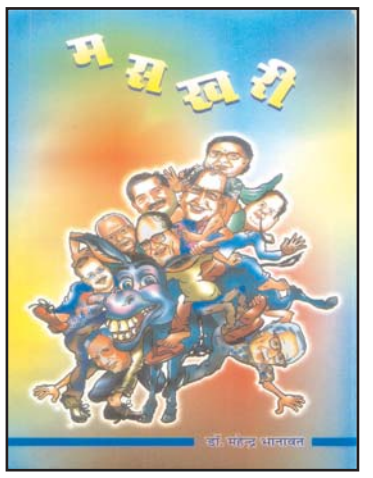

वे मुझसे लेखन के कारण परिचित थे और बड़ा आत्मीय स्नेह रखते थे। सदैव मुस्कराते और अपने पूरे बदन को हलचल दिये रहते। उनका गेहुंवारंगी गांधीवादी डीलडौल खद्दर के परिधान में चमकी देता लुभानेवाला था।

मेरे नाम उनका लिखा पत्र 'मसखरी' के जवाब में था। मसखरी नामक पुस्तक होली पर हमझोली मित्र-मसिजीवियों से संबंधित पुछल्लों का सन् 1985 से 2010 तक का संग्रह है, जगह-जगह प्रभावी कार्टूनों से लकदक। भट्टजी ने लिखा- ''इससे अच्छी सौगात क्या हो सकती थी। मैं अपने 91वें वर्ष का अंतिम दिन पूरा कर रहा था जब आपकी 'मसखरी' आयी, अत्यंत आनंदप्रद यह रहा ... कुछ भी कहने के पहले जिन तीन के बारे में कहा गया है, मैं उन्हें ही सबसे अधिक निकटता से जानता था। इन तीनों की आंतरिक शक्तियों का प्रभाव है कि जिन्हें आप सबने सबसे ज्यादा याद किया है। उनका अति अनुग्रह मुझे इतनी दूर रहने वाले को भी उतना ही प्राप्त रहा। आतुरजी (डॉ. प्रकाश आतुर) उदयपुर-जयपुर में जब मिलते थे, आतुरता से मिलते थे। चन्द्रेशजी (व्यास) मेरे लिए दूज का चांद से थे जिनकी अभिलाषा सदा रहती है और नागरजी (पं. जनार्दनराय नागर) ने अपनी अमर रचना (जगद्गुरु शंकराचार्य उपन्यास के दस भाग) के पृष्ठ-दर-पृष्ठ तक सुनाये थे जब उनके तन-मन से वह कागज के पृष्ठों पर आ रही थी। इन तीनों के लिए मेरे और भी अनेक संस्मरण हैं। मैं मन से बड़ा प्रसन्न हुआ उनके सम्बन्ध में पंक्तियां पढ़कर।''

पंक्तियां ये थीं जो 'स्मरणांजलि' शीर्षक से सन् 1999 में लिखी थीं-

नागर बिन या नगर की, सूख गई रसखान।
तुम बिन विद्यापीठ की, कौन करे पहचान।।
तुम नहीं चन्द्रेश, लगता हम सभी को आज यूं।
एक हीरा था जो मुट्ठी, सोगया आकाश में।।
आतुर बिन होली दिन लगते, सूने और उदास।
ज्यों बसंत में सूख गया हो, मादक मुखर पलाश।।

मसखरी के पुछल्लों में पूरी तरह रमण करने के बाद भट्टजी ने लिखा- 'ये शानदार पुछल्ले उन दिनों की प्रेरणा और योजना के हैं जब सचमुच में बड़ी मसखरी हुआ करती थी। आप इस पर पूरा अभिमान और अपार आनन्द अनुभव कर सकते हैं कि इस 'एक उपलब्धि' को आपने आकार और अस्तित्व दिया है।'

अपने ढाई पृष्ठीय टाइप्ड पत्र में भट्टजी ने अन्त में लिखा- 'जिन्होंने होली का पुराना जमाना देखा है उन्हें दु:ख होता है कि उन्मुक्तता जितनी बंधन में आई है, उतनी ही इसमें गंदगी आई है।

मसखरी की रचनाओं में जीवन-तत्व और जीवनी-शक्ति है। मेरी यह आस्था ही उन सबका आदर है जिनकी पंक्तियों का संयोजन आपने सामर्थ्य और सफलता से किया है। जो चित्र और चित्रण इसके साथ आये हैं, उन्होंने चांदनी को चमकाया है और मुद्रण की सुचारुता ने इसका स्तर उठाया है। मेरी अपार कृतज्ञता इसके साथ है और यह कामना-'रहिबो आनंद नित।'

आये दिन हमारे पास भी ऐसी पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें आती हैं किन्तु हम कितना उनका आस्वाद लेते, रसास्वादन करते हैं तथा ठीक से जवाब भी दे पाते हैं ? मोबाइल संस्कृति ने शब्द-अर्थ देने की आत्मीय संस्कृति ही मटियामेट करदी। काश! भट्जी हमारे बीच बने रहते। - **म. भा.**

होली पर नेजा लूटने की परम्परा

उदयपुर (वि.)। आस्थामूलक परम्परावादी देश के रूप में भारत की पहचान पूरे विश्व में है। कोई त्यौहार उत्सव हो, कहीं-न-कहीं, कोई-न-कोई

ऐसी परम्परा देखने को मिलेगी जिसमें मनोरंजन, जनरंजन के साथ जनहित, कृषिहित से जुड़ी घटना की प्रमुखता रहेगी।

नेजा लूटने के पीछे भी यही भाव है। उदयपुर संभाग के आदिवासी बहुल इलाके में इसकी परम्परा विभिन्न रूपों में प्रचलित है। प्रतापगढ़ जिले के दुधली टाण्डा गांव के लबाना समाज में न जाने कबसे महिला-पुरुषों की लट्ठमार होली प्रचलित है। इसमें महिलाओं की भागीदारी प्रबल रूप में देखी जाती है जब वे पुरुषों पर अपने हाथ में लिये लट्ठ का वार करती हैं। इसे पुरुष अपनी चतुराई से अपने पर आये वार का बचाव करता है।

इसका प्रमुख दर्शनीय रूप नेजा है। इसके अन्तर्गत किसी खेत पर अथवा खुले स्थान पर वृक्ष की ऊंची टोंचपर कोई वस्तु बांधदी अथवा लटकादी जाती है जिसे कोई होशियार बन्धु प्राप्त करने ऊपर चढ़ता है। प्रथम तो बिना किसी सहारे वृक्ष की ऊंचाई तक चढ़ना ही बड़ा दुष्कर होता है। कुछ वृक्ष जैसे खजूर आदि तो सहज चढ़ने जैसे होते ही नहीं।

ऐसी स्थिति में कोई सफल भी होगया तो नेजानामी वह वस्तु तोड़ लाकर जब अत्यन्त सावधानीपूर्वक उतरने की कोशिश करता है तब उसे चारोंओर से घेरनेवाला महिला समुदाय अपने हाथों में पकड़े लट्ठ से वार कर उसे परास्त करने का शौर्य प्रदर्शित करने का कमाल दिखाता लगता है। इसमें कोई पुरुष घायल अथवा आहत होते नहीं सुना गया।

इस वर्ष इसे देखने आसपास के मानपुरा, ढलमु, सिद्धपुरा, करमदीखेड़ा, अखेपुर, धमोत्तर, बोरी, बारा वरदा, बिहारा, नकोर, ग्यासपुर, कड़ियावद, अमलावद, थड़ा, युवासिया, गोदाला आदि गांवों के लोग एकत्रित हुए और इस आयोजन को यादगार बनाने में बड़ी भूमिका निभाई।

लोकसंस्कृतिवेत्ता डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि प्रारम्भ में जब इसकी शुरूआत हुई तो लोगों ने उस पुरुष को मना करते इसमें भाग लेने को वर्जित किया। इधर मनाकरने के लिए 'ने जा' (नहीं जा) शब्द प्रचलित है। डॉ. भानावत ने बताया कि सन् 1958 में जब पहलीबार भारतीय लोककला मण्डल ने राजस्थान विकास विभाग द्वारा उनके संयोजन में लोककलाकार प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया तो सास-बहू के एक नृत्य-संवाद-गीत में 'ने जा' शब्द सुना। गीत था- 'सासुजी थांका जाया ने ने जा रोटी देवा ने।' कालान्तर में यही ने जा उस खेल-प्रहसन के लिए प्रयुक्त होकर नेजा आयोजन के रूप में रूढ़ होगया।

यों भी होली के दिनों में जगह-जगह महिलाएं आज भी रास्ता बन्द कर उधर से गुजरनेवाले पुरुष से होली के नजराना के रूप में चन्दा वसूल करती पाई जाती हैं। इसलिए उनकी घरवालियां उस रास्ते नहीं जाने की सीख देती हैं।

नाबालिगों का नकली विवाह

उदयपुर (वि.)। ऐसी ही एक परम्परा नाबालिगों के नकली विवाह की है। यह परम्परा बांसवाड़ा जिले के बड़ोदिया गांव में वर्षों से प्रचलित है। इसमें गांव के युवा मिलकर दो नाबालिग बच्चों को ढूंढ़ने निकलते हैं। जब वे मिल जाते हैं तो ढोल के माध्यम से पूरे गांव को इसकी सूचना दे दी जाती है। दोनों युवकों को सर्वप्रथम लक्ष्मीनारायण मन्दिर में ले जाकर धोक दिलाई जाती है फिर गांव के मुखिया का आदेश प्राप्तकर वैवाहिक रस्में प्रारम्भ की जाती हैं।

इस होली पर एक राज नामक लड़का दूल्हा बना तथा दूसरे लड़के मानस को दुल्हन बनाया गया। दोनों को खूब अच्छी तरह सजाकर पूरे गांव में उनकी शोभायात्रा निकालीगई। दोनों को गांववालों की ओर से चाकलेट, आइसक्रीम और नकद राशि के अलावा कोरोना से बचाव के लिए मास्क दियेगये। फाल्गुन के गीत गाये जाकर सभी ने बड़ा उल्लास व्यक्त किया हैं। शोभायात्रा के पश्चात सभी अपने-अपने घर लौटे और दूल्हा-दुल्हन का आपसी सम्बन्ध भी विच्छेद हुआ समझा गया।

मुखिया नाथजी के अनुसार किसी समय इस गांव में खेडुवा जाति के लोगों का प्राधान्य था। गांव के बीचोंबीच नाला बहने के कारण गांव दो फाड़ों में बंटा हुआ था अत: दोनों हिस्सों से दो लड़के ढूंढ़कर उनका नकली ब्याह कराया जाता। यह बात कोई 90 वर्ष पुरानी है जो गांव के बड़े बुजुर्गों से सुनी है। उस वक्त विवाह रचाने की जोरदार तैयारियां चल रही थीं कि अचानक जोरों की बरसात होने से विवाह की रस्म तो रूक गई पर 200 से अधिक दुधारू डोबों (भैंसों) की मौत हो गई। ग्रामीणों को लगा कि नाबालिगों के विवाह की परम्परा को धक्का लगने से देवता कुपित होगये हैं सो यह अनर्थ, अनहोनी देखने को मिली है। उसके बाद से यह परम्परा बिना किसी टूटभाग के बदस्तूर जारी है।

लेणा बंटाई की रस्म

पूना से बनवारीदत्त जोशी 'शब्द रंजन' को बड़ी तसल्ली से पढ़ते हैं और समय-समय पर बहुत सारे स्थानीय-आंचलिक विशेष शब्दों में निहित गूढ़ार्थ के बारे में भी विचार विनिमय करते हैं। इसी प्रसंग में उन्होंने मेवाड़ में प्रचलित लेणा बांटने अथवा लेणा बंटाई रस्म के सम्बन्ध में जानकारी चाही सो यहां प्रस्तुत है। लेणा का सहज सरल अर्थ नमूना से है। इसके पीछे सुख एवं आनन्द, हर्ष एवं उत्साह का भाव छिपा है। यह खुशी के विशेष प्रसंग की रस्म है जिसका सम्बन्ध विवाहिता लड़की अथवा बहू से है जिसके अपने पीहर अथवा सुसराल पहुंचने की गांववालों को सूचना देने से है।

लेणे के रूप में प्रायः बेसन की चक्की अथवा नुगतीदाणा होता है जो ये पास-पड़ोस में रहनेवाले, सगा-समधी, जान-पहचानवाले या फिर जाति के लोगों में, घर-घर में बांटे जाते हैं। विवाह पर नवपरिणिता बहू के घर आगमन, विवाहोपरान्त आनेवाली पहली दीवाली के बाद बहू के सुसराल आगमन पर या फिर प्रथमबार लड़की के गर्भवास होने पर सातवें मास पीहर जानेपर लेणे बांटने की परम्परा रही है।

संतान होने के बाद जब प्रसूता को सुसराल भेजीजाती है तब उसके साथ भांडा भेजाजाता है। उसमें नुगती के साथ पुड़ियां भेजीजाती हैं। ये सूखी होती हैं। बांटने के लिए इन्हें खाण्डकर अर्थात् चूराकर मिठाई के साथ बांटा जाता है। इसे 'भांडा बंटाई' कहते हैं। यह भांडा एक बड़े कलश में भेजाजाता है जिस पर शुभशकुनी कुंकुम-हल्दी का सातिया मांड दिया जाता है। कलश के ढक्कन पर लच्छे की सहायता से लाल-पीला कापड़ा बांध दिया जाता है।

जिस दिन लेणे बांटने होते हैं उस दिन भोजनोपरान्त पास-पड़ोस तथा सगे-समधी औरतों को 'लेणा बांट आवजो' कहकर लेणे बांटने का नूता-न्यौता उर्फ निमंत्रण दिया जाता है। अच्छे वस्त्राभूषणों में सजधजकर औरतें इकट्ठी होने के पश्चात सभी लेणे बांटने निकलती हैं। एक बड़े तपेले में बांटने वाली मिठाई ले ली जाती है जो नायण अपने सिर पर उठाये चलती है। एक थाली में, थाली के छोटे-बड़े आकार के अनुसार आठ-दस लेणे रख दिये जाते हैं। सेवगानी इन्हें बांटनेजाती है। उसके साथ प्रतिनिधि के रूप में कोई घरवाली रहती है।

लेणा की प्रारम्भिक स्थिति पर विचार करते हुए डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि पहलेपहल जब यह सिलसिला प्रारम्भ हुआ तो बड़े बुजुर्गों ने लेने से इन्कार करदिया। उनका यह सोच था कि कोई गरीब घरवाले यदि अपने वहां से रस्मी के रूप में मिष्ठान्न नहीं भेज पाये तो उन्हें नीचा देखना पड़ेगा किन्तु बांटनेवालों ने तर्क दिया कि पूरी जाति-बिरादरी में न सही, खास-खास परिवारों में तो यह रस्म अदायगी करनी ही पड़ेगी ताकि खुशी का इजहार भी हो जाय और सबका मुंह मीठा कर दिया जाय। अतः तय रहा कि यह तो 'लेणा' ही होगा। यहां लेणा से तात्पर्य लेने से है। रखने से है। स्वीकारने से है। कालान्तर में यह 'लेणा' ही लेणा के रूप में रस्म बनगया। इससे मिलती-जुलती रस्म 'लेण' बंटाई है। विवाह-प्रसंग पर सगे-समधी पुरुषों को पंगत पर जीमते वक्त एक-एक को लेण बंटाई का उपहार दिया जाता है। इसमें प्रायः थाली दी जाती है। औरतों को एक-एक कापड़ा दिया जाता है। यह कापड़ा रंगीन कपड़ा होता है जिससे पहनी जानेवाली कांचली (कंचुकी) बनसके। इसलिए कांचली कापड़ा शब्द साथ-साथ प्रयुक्त होता है। - संपादक

शराब से होती है घातक बीमारियां

उदयपुर (वि.)। शराब पीने से सामाजिक मान-सम्मान तो कम होता ही है, पारिवारिक अशांति के साथ कई नुकसान होते हैं। इससे थकान, मेमोरी लॉस, आंखों की रोशनी कमजोर या खत्म होना, हेपेटाइटिस, सिरोसिस जैसी लाइलाज बीमारियां, हाइपरटेंशन, हार्ट की समस्याएं, डायबिटीज, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल, आंतें या पैंक्रियाज डैमेज हो सकता है।

यह बात पारस जे. के. हॉस्पिटल में पेट, आंत व लिवर रोग के विशेषज्ञ डॉ. राजीव शर्मा ने कही। वे शराब से होने वाली बीमारियों पर आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि शराब से शरीर की क्षमताएं कमजोर होती हैं। कई प्रकार की दुर्घटनाएं भी शराब के कारण होती हैं जो जानलेवा हो सकती हैं। एक स्टडी में पाया गया है कि सरकार द्वारा एल्कोहल खरीदने पर टैक्स बढ़ाने के बाद शराब से होने वाली मौतों में जबरदस्त गिरावट दर्ज की गई थी। ये प्रभाव अन्य निरोधक रणनीतियों से दो से चार गुना ज्यादा प्रभावी था। शराब पीने वाले मरिजों को समय-समय पर काउंसिलिंग व नशामुक्ति केंद्र की मदद लेनी चाहिये। नशामुक्ति केंद्र में ग्रुप काउंसिलिंग के द्वारा शराब छुड़वाने में मदद मिलती है। इसके अलावा सपोर्ट ग्रुप व परिवार की मदद से भी शराब की आदत को दूर किया जा सकता है।

अमेज़न सम्भव वेंचर फंड की घोषणा

उदयपुर (वि.)। अमेज़न इंडिया ने अपने प्रमुख इवेन्ट, सम्भव, के शुरुआती सत्र में एसएमबी डिजिटलीकरण, कृषि और हेल्थकेयर में टेक्नोलॉजी इनोवेशन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्टार्टअप्स और एंट्रेप्रेन्योर्स में निवेश करने के लिए 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अमेज़न सम्भव वेंचर फंड की घोषणा की।

वेंचर फंड टेक्नोलॉजी आधारित स्टार्टअप्स में निवेश करेगा जो डिजिटल इंडिया की संभावनाओं को साकार करने के लिए उत्सुक एवं संवेदनशील हैं। वेंचर फंड विशेष रूप से एसएमबी (लघु और मध्यम बिजनेस) को डिजिटाइज़ करने के लिए सर्वोत्तम विचारों को प्रोत्साहित करने, किसानों की उत्पादकता में सुधार करने के लिए कृषि में इनोवेशन करने और उन्हें उपभोक्ताओं के लिए भारत के खेतों से सर्वश्रेष्ठ उत्पादन करने और सभी टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए सार्वभौमिक और गुणवत्तापूर्ण हेल्थकेयर तक उनकी पहुंच बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

अमेज़न द्वारा एमएसएमई डिजिटलीकरण

उदयपुर (वि.)। अमेज़न इंडिया ने अपनी प्रगति पर अपडेट प्रस्तुत किया जिसमें भारत में 2.5 मिलियन एमएसएमई का डिजिटलीकरण करने, 3 बिलियन डॉलर का क्यूमुलेटिव एक्सपोर्ट करने और 1 मिलियन रोजगार सृजन करने में मदद करने की जानकारी दी है। पिछले साल उद्घाटित सम्भव समिट में अमेज़न ने 10 बिलियन एमएसएमई को डिजिटल रूप से सक्षम करने के लिए 1 बिलियन डॉलर के निवेश की घोषणा की थी, जो ई-कॉमर्स एक्सपोर्ट को 10 बिलियन डॉलर तक ले जाने की क्षमता रखता है और 2020 से 2025 के बीच भारत में 1 मिलियन अतिरिक्त रोजगार पैदा करेगा। कंपनी अपनी इन प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए सक्रियता से काम कर रही है।

अमेज़न इंडिया के ग्लोबल सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और कंट्री हेड अमित अग्रवाल ने कहा कि हम अपने इकोसिस्टम में छोटे और मझोले बिजनेस के साथ काम करते हुए, नए टूल्स, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो भारतीय बिजनेस की एंट्रेप्रेन्योरशिप की भावना को प्रोत्साहित करेगा, देश से एक्सपोर्ट को बढ़ावा देगा, बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन करने में मदद करेगा और एक आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को साकार करने में अपना योगदान देगा।

एमवे का आयुर्वेद पर बड़ा दाव

उदयपुर (वि.)। एमवे इंडिया ने अपने प्रमुख ब्रांड न्यूट्रीलाइट के तहत च्यवनप्राश बाई न्यूट्रीलाइट लॉन्च किया है। च्यवनप्राश बाई न्यूट्रीलाइट पोषक तत्वों से भरपूर 32 जड़ी-बूटियों का एक गाढ़ा मिश्रण है, जिसे 16 प्रमाणित कार्बनिक अवयवों के साथ डीएनए फिंगरप्रिंटिंग द्वारा मान्यता प्रदान की गई है, और इसमें कोई प्रिजर्वेटिव्स भी नहीं हैं।

एमवे इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंशु बुधराजा ने कहा कि पारंपरिक भारतीय रेसिपी से प्रेरित न्यूट्रीलाइट च्यवनप्राश का सूत्रीकरण मुख्य रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने, शरीर के कायाकल्प का समर्थन करता है, साथ ही ताकत और आंतरिक बल को बढ़ाता है। संक्रमणों से लड़ने में मदद करता है। इस लॉन्च के साथ ही एमवे ने च्यवनप्राश सेगमेंट में देश में फलते-फूलते आयुर्वेद बाजार के एक बड़े हिस्से पर कब्जा जमाने की रणनीति के साथ प्रवेश किया।

पारंपरिक हर्बल श्रेणी पर विशेष ध्यान देने के साथ विटामिन और डाइटरी सप्लिमेंट्स बाजार में एमवे की शानदार उपस्थिति ने हमें च्यवनप्राश वर्ग में विस्तार करने के लिए विवश कर दिया। हमारा पहले वर्ष में प्रीमियम च्यवनप्राश वर्ग की 20 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी पर कब्जा करने का लक्ष्य है। हम पारंपरिक जड़ी-बूटियों की श्रेणी पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने के साथ न्यूट्रिशन श्रेणी में नवाचार करना और इसे मजबूत करना आगे भी जारी रखेंगे।

पीआईएमएस सिटी सेन्टर में होगी जांच, लगेंगे टीके

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल, उमरड़ा की ओर से शहर के फतहपुरा स्थित सिटी सेन्टर पर कोविड टीकाकरण और कोविड टेस्ट की शुरूआत की गई है।

चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि कोरोना के लगातार बढ़ते मामलों को देखते हुए शहर के फतहपुरा स्थित 17-सी, सेवा मंदिर रोड़ पर सिटी सेन्टर में कोविड टीकाकरण और कोविड टेस्ट की शुरूआत की गई है। यहां 45 वर्ष से अधिक आयु के सभी व्यक्तियों के लिए कोविड टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध है। साथ ही एनएबीएल लेब्रोटरी मान्यता प्राप्त कोरोना आरटी पीसीआर टेस्ट भी किया जा रहा है। श्री अग्रवाल ने लोगों से नियमित मास्क लगाने, सोशल डिस्टेंशिंग की पालना करने की अपील करते हुए कहा कि शहरवासी अधिक से अधिक इस सुविधा का लाभ उठायें। उल्लेखनीय है कि पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरड़ा द्वारा पिछले एक वर्ष में कोरोना के प्रभावी उपाय व उपचार किये गये हैं।

कोटक बना राजस्थान रॉयल्स का साथी

उदयपुर (वि.)। कोटक महिन्द्रा बैंक लि. (केएमबीएल) ने लगातार दूसरे वर्ष राजस्थान रॉयल्स का गौरवाशाली आधिकारिक पार्टनर बनने की घोषणा की। बीते साल कोटक मायटीम इमेज कार्ड को राजस्थान रॉयल्स फैन्स की जो उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया मिली उससे प्रोत्साहित होकर केएमबीएल इस वर्ष मायटीम कार्ड की दूसरी इनिंग पेश कर रहा है- क्रिकेट थीम वाले डेबिट व क्रेडिट कार्ड्स की यह रेंज खासतौर पर राजस्थान रॉयल्स फैन्स के लिए डिज़ाइन की गई है।

ओपो का नया एफ19 लॉन्च

उदयपुर (वि.)। ओपो ने एफ सीरीज़ के तहत स्लीक डिवाइस ओपो एफ 19 लॉन्च किया है। ओपो एफ 19 एफ सीरीज़ के तहत एक और आधुनिक मिनिमलिस्टिक स्लीक डिवाइस है जो 33 डब्ल्यू फ्लैश चार्ज, 5000 एमएएच बैटरी, लाईटवेट एवं स्लीक डिज़ाइन से युक्त है। हाल ही में ओपो एफ 19 प्रो सीरीज़ के लॉन्च के साथ कंपनी ने 6 सालों की छोटी अवधि में एफ सीरीज़ उत्पादों की 10 मिलियन युनिट्स बेचने की उपलब्धि हासिल की है। लॉन्च कार्यक्रम की मेजबानी कॉमेडियन ज़ाकिर खान ने की। एफ 19 प्रिज़्म ब्लैक और मिडनाईट ब्लू में 18990 की रीटेल कीमत पर 6जीबी रेम-128 जीबी स्टोरेज के साथ रीटेलरों और अग्रणी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है।

माउंटेन ड्यू का नया अभियान लॉच

उदयपुर (वि.)। माउंटेन ड्यू हमेशा ही डर और खुद पर शक किए बिना जोखिम लेने और सफलता पाने के लिए सीमाओं से परे जाने की भावना को सलाम करता है। रोमांचक फिल्मों के माध्यम से युवाओं को डर से पार पाने के लिए प्रेरित करने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए माउंटेन ड्यू ने 2021 के गर्मियों के सीजन के लिए बिल्कुल नया अभियान लॉन्च किया।

विनीत शर्मा, कैटेगरी डायरेक्टर-माउंटेन ड्यू ऐंड स्टिंग, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि डर के आगे जीत दर्शन के साथ माउंटेन ड्यू ने हमेशा ही उन लोगों की भावना का सम्मान किया है जो असाधारण परिणाम हासिल करने के लिए खुद डर का सामना करते हैं। 2021 में ब्रैंड उन असली हीरो का सम्मान करेगा जो चुनौतियों का सामना करते हैं, भले ही उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। हमें पूरा भरोसा है कि हमारी डर हैसियत नहीं, हिम्मत देखता है की कहानी ग्राहकों को प्रभावित करेगी। इसमें माउंटेन ड्यू के ब्रैंड एंबेसडर ऋतिक रोशन नजर आते हैं।

ऋतिक रोशन ने कहा कि असली हीरो अपनी ताकत से जाने जाते हैं न कि इससे कि वे कहां से ताल्लुक रखते हैं। माउंटेन ड्यू की डर हैसियत नहीं, हिम्मत देखता है की कहानी मेरे से काफी मिलती-जुलती है क्योंकि मेरा भी मानना है कि किसी व्यक्ति का साहस डर का सामना करने में है जो उसे असली हीरो बनाता है।

200 लाख टन उत्पादन का लक्ष्य

उदयपुर (वि.)। खाद्य तेल निर्माताओं के शीर्ष संगठन द सोलवेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया 23 अप्रैल को मिशन मस्टर्ड 2025 पर एक वर्चुअल वेबिनार आयोजित करने जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा में आगे कदम बढाते हुऐ मस्टर्ड मिशन 2025 के लिये संगठन ने वर्ष 2025 तक 200 लाख टन का उत्पादन लक्ष्य निर्धारित किया है।

एसईए के कार्यकारी निदेशक बी.वी मेहता ने बताया कि रेपसीड मस्टर्ड बीज देशवाशियों की जनता का दिल है। इसके तेल को उत्तरी एवं पूर्वी भारतीय राज्यों में काफी प्रथामिकता दी जाती है। रेप मस्टर्ड की देश में रबी ऑयलसीड क्रोप में महत्वपूर्ण भूमिका है एवं वर्ष की दूसरी तिमाही के तेल सत्र में सभी ऑयलसीड्स के मूल्य निर्धारण में इसकी प्रमुख भूमिका होती है।

गीतांजली बना 'मोस्ट प्रोमिसिंग मेडिकल कॉलेज ऑफ द ईयर'

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, उदयपुर को हाल ही में दिल्ली में आयोजित एशिया एजुकेशन एंड सम्मिट अवार्ड्स 2021 की श्रेणी 'मोस्ट प्रोमिसिंग मेडिकल कॉलेज ऑफ द ईयर' (राजस्थान) का पुरस्कार शिक्षा मंत्री संजय धोत्रे, महाराष्ट्र राज्य के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री रामदास अथावले, फिल्म अभिनेता सोनू सूद एवं अभिनेत्री जयाप्रदा द्वारा गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के डीन डॉ. नरेन्द्र मोगरा एवं पैरामेडिकल प्रिंसिपल डॉ. जी. एल. डाड को प्रदान किया गया। इस श्रेणी में अवार्ड पाने वाला उदयपुर संभाग का केवल मात्र यही हॉस्पिटल।

प्रशांत अग्रवाल को 'श्रीवैश्य रत्न सम्मान'

उदयपुर (वि.)। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल को हरिद्वार के ज्वालापुर स्थित अग्रवाल समाज सम्मेलन में 'श्रीवैश्य रत्न सम्मान' प्रदान किया गया। इस मौके पर श्री अग्रवाल ने संस्थाओं की निःशुल्क सेवा प्रकल्पों एवं हरिद्वार मेला परिसर में दिव्यांगजन के लिए लगाए गए ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) शिविर की जानकारी दी। इससे पूर्व अग्रवाल ने पतंजलि योग पीठ के संस्थापक योग गुरु स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण एवं परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती से भेंट की। इस अवसर पर वंदना अग्रवाल और पलक अग्रवाल भी मौजूद रहे।

मांडू में सिंहासन.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

असल में, मालवा में कोई वीर रहा नहीं। सभी डरपोक थे इसीलिए नाहरसिंह ने मांडू जाकर अपना झंडा गाड़दिया। रूफाळी ने मरते दमतक अपना भेद किसी को नहीं दिया। अपने कुल के लोगों को भी यह भनक नहीं पड़ने दी कि वह मुसलमान है। बाजबहादुर अल्लाउद्दीन खिलजी के बाद हुआ।

जैसे रूपमती, रूपमती नहीं थी वैसे ही वहां का रूपमती महल भी कहीं से महल होने का आभास नहीं देता है। एक शाही घर से भिन्न यह कुछ नहीं है पर प्रारंभ में जिस नाम से जो कुछ उछाल दिया गया, वही नाम चलपड़ा। पर्यटक जो कुछ कहा जाता है, उसे स्वीकार कर लेता है और इस तरह असलियत से कहीं परे नकली चीजों का पहाड़ बनता रहता है। खण्डहरों में खोज करना कोई मामूली बात नहीं है।

दूसरे दिन रूपमती के इस महल तक पहुंचने में दिन की एक बजगई। उस दिन की चिलचिलाती धूप में हम महल की ऊपरी छतरी से चारों ओर दूर-दूर तक अपनी निगाहें फैंकते-फैलाते रहे तभी एक खेत से हवाओं का लाल वेग दिखाई दिया। यह दिशासूल था। दिशासूल देखकर कहीं जाने, नहीं जाने की परंपरा हमारे देश में बड़ी गहरी पैठी हुई है। पहले तो दिशासूल देखकर ही लोग घर से बाहर जाने के लिए पांव निकालते थे। परिवार सहित कहीं जाने के लिए तो दिशासूल सबके आड़े आता ही आता है। मेरे गांव कानोड़ से उदयपुर आने के लिए सोमवार या फिर गुरूवार ही शुभ माना जाता था।

मांडू में खुरसाणी इमली के पेड़ों की बहार है। ये पेड़ बड़े घेरघुमेर और अपनी प्राचीनता की पूरी पहचान देनेवाले हैं। इनके फल-ही-फल सब ओर लटके मिलते हैं। इस पेड़ के तने भी बीस-बीस, तीस-तीस फीट की मोटाई लिये मिलेंगे। इनका फल कई दवाइयों में बड़ा उपयोगी है। इसे 'गोरखजी की आमली' भी कहते हैं। राजा भतृहरि ने पिंगला को यही फल दिया था। यहां इमली के पांच हजार बरस पुराने पेड़ भी कहे जाते हैं।

रूपमती महल से लौटते समय रास्ते में मणिपुष्प का झाड़ देखा। इसके फूलों से शहद जैसी खुशबू आरही थी। ये फूल नौ कुली नागों के चढ़ाये जाते हैं।

इन फूलों को देखकर सहज ही रावण की याद आगई जिसने जो सोचा, वह सब कुछ कर दिखाया। केवल तीन चीजें उसकी सोची रहगईं। एक तो उसने सोने के कनक पुष्पी फूल तैयार किये पर उनमें खुशबू नहीं डालसका। दूसरी, स्वर्ग के सीढ़ी नहीं लगासका और तीसरी, लंका को अखण्ड नहीं रखसका। बीच रास्ते में एकओर भारतीजी की समाधि देखी। ये गोरखनाथ भारती थे। इनकी समाधि पर मुसलमानों ने गुम्बद बनारखी है जबकि नीचे इंडा है और पास में तुलसी का पौधा लहलहा रहा है।

मांडू की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिंहासन बत्तीसी की खोज रही। राजा विक्रमादित्य से जुड़े इस सिंहासन के बारे में बहुत कुछ पढ़ने और लोकजीवन में सुनने को मिला। न्याय के लिए यह सिंहासन कहां स्थापित किया हुआ था, इस संबंध का इतिहास अबतक मौन रहा और इससे जुड़े कहानी-किस्से भी रहस्य रोमांचक ही प्रतीत होते रहे हैं।

सरजुदासजी 'बापूजी' में लोकदेवता की आत्म-प्रविष्ठि ने अचानक हमें उस राह पर मोड़ दिया जिधर जाने के लिए हम बिल्कुल तैयार नहीं थे। कारण कि उधर देखने को कुछ था भी नहीं। यह राह थी लाल बंगला की तरफ लांबा तालाब नामक बस्तीवाली।

हम इस बस्ती के पासवाले चार दरवाजे वाले खंडहर बने कक्ष में पहुंचगये। इसी कक्ष में से सिंहासन प्रकट होता था और सामने फैले विशाल चौक में जनता बैठ जाती थी। चारों दरवाजों पर चार कड़े पहरे रहते थे। जमीन से यह सिंहासन तब सत्रह हाथ करीब नीचे था। आज तो जमीन की सतह से छह-सात हाथ माटी ऊपर आईहुई है। इस सिंहासन को बत्तीस पुतलियां लाती थीं इसीलिए इसका नाम 'सिंहासन बत्तीसी' पड़ा।

राजा विक्रमादित्य इस सिंहासन पर बैठकर न्याय करता। यहां मनुष्य गति (जाति) का ही नहीं, बत्तीस गति का न्याय होता। नागलोक तक के जीव यहां आकर न्याय पाते। पुतलियां राजा को सत-असत का पता लगाकर देतीं और राजा तदनुसार न्याय करता। इससे तनिक भी किसी के साथ अन्याय की आशंका नहीं रहती। इसीलिए विक्रमादित्य का न्याय सबओर 'न्यायी राजा' के नाम से लोकप्रिय था।

यह सिंहासन बाईस माणी सोने यानी 274 मन का था। इसे हरसिद्धि ने योगमाया से बनवाया था। हरसिद्धि के बाहुबली नाम का लड़का था पर बहादुर होते हुए भी उसमें न्यायिक बुद्धि नहीं थी। राजा विक्रम के बाद बड़े-बड़े राजा इस सिंहासन के लिए दौड़े पर यह किसी के हाथ नहीं आया। इसे तथा पुतलियों को स्थिर कर दियागया।

हमारे लिए यह समय बड़ा ही अकल्पनीय विचित्र आनंद-अनुभव का था। कई सारी कल्पनाओं में हम खोगए। राजा विक्रम व पुतलियों के कई चित्र हमारे मन-मस्तिष्क को कुरेदते रहे। हमने तब बत्तीस पुतलियों के नाम जानने चाहे। कल्लाजी बावजी ने सिंहासन स्थल पर बैठकर एक-एक नाम बताना शुरू किया- (1) रत्नमंजरी (2) चित्ररेखा (3) रतिवामा (4) चन्द्रकला (5) लीलावती (6) कामकन्दला (7) कामादी (8) पुष्पावती (9) मधुमालती (10) प्रभावती (11) पद्मावती (12) कीर्तिमती (13) त्रिलोचनी (14) त्रिलोकी (15) अनूपवती (16) सुंदरवती (17) सत्यवती (18) रूपरेखा (19) तारा (20) चन्द्रज्योति (21) अनुरोधवती (22) अनूपरेखा (23) करूणावती (24) चित्रकला (25) जयलक्ष्मी (26) विद्यावती (27) जगज्योति (28) मनमोहनी (29) वैदेहा (30) रूपवती (31) कौशल्या (32) किलंकी।

मांडू के किस्से बड़े बांके और रस फांके हैं पर कौन विश्वास करने वाला है ? पर्यटक आते-जाते रहेंगे। अचरज करते आश्चर्यचकित होते रहेंगे पर रहस्य तो रहस्य ही बने रहेंगे।

सच ही है, ऐसे रहस्यों की गुंडी खोलना मनुष्य की ताकत, समझ और शक्ति-समृद्धि से परे है। कोई पहुंची देव-शक्ति ही महरबान हो सकती है। मैं स्वयं ही नहीं जान पाया कि कैसे किस घड़ी में कल्लाजी बावजी की मुझ पर कृपा हो गई और मीरांजी के प्रसंग में मुझे कई प्रांतों के कई स्थानों का परिदर्शन करा खंडहरों की वैभव-विभूति की विरासत का सत चखाया।

नक्सलियों से कैसे निपटें ?

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

छत्तीसगढ़ के टेकलगुड़ा के जंगलों में 22 जवान मारे गए और दर्जनों घायल हुए। माना जा रहा है कि इस मुठभेड़ में लगभग 20 नक्सली भी मारे गए। यह नक्सलवादी आंदोलन बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से 1967 में शुरु हुआ था। इसके आदि प्रवर्तक चारु मजूमदार, कानू सान्याल और कन्हाई चटर्जी जैसे नौजवान थे।

ये कम्युनिस्ट थे लेकिन माओवाद को इन्होंने अपना धर्म बना लिया था। मार्क्स के 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' के आखिरी पेराग्राफ इनका वेदवाक्य बन गया। ये सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा सत्ता-पलट में विश्वास करते है इसीलिए पहले बंगाल फिर आंध्र व ओडिशा और फिर झारखण्ड और मध्यप्रदेश के जंगलों में छिपकर हमले बोलते रहे हैं और कुछ जिलों में ये अपनी समानांतर सरकार चलाते हैं।

इस समय छत्तीसगढ़ के 14 जिलों में और देश के लगभग 50 अन्य जिलों में इनका दबदबा है। ये वहां छापामारों को हथियार और प्रशिक्षण देते हैं और लोगों से पैसा भी उगाहते रहते हैं।

ये नक्सलवादी छापामार सरकारी भवनों, बसों और नागरिकों पर सीधे हमले भी बोलते रहते हैं। जंगलों में रहने वाले आदिवासियों को भड़काकर ये उनकी सहानुभूति अर्जित कर लेते हैं और उन्हें सब्जबाग दिखाकर अपने गिरोहों में शामिल कर लेते हैं।

ये गिरोह इन जंगलों में कोई भी निर्माण-कार्य नहीं चलने देते हैं और आतंकवादियों की तरह हमले बोलते रहते हैं। पहले तो बंगाली, तेलुगु और ओड़िया नक्सली बस्तर में डेरा जमाकर खून की होलियां खेलते थे लेकिन अब स्थानीय आदिवासी, हिडमा और सुजाता जैसे लोगों ने उनकी कमान संभाल ली है। केन्द्रीय पुलिस बल आदि की दिक्कत यह है कि एक तो उनको पर्याप्त जासूसी सूचनाएं नहीं मिलतीं और वे बीहड़ जंगलों में भटक जाते हैं। उनमें से एक जंगल का नाम ही है—अबूझमाड़।

इसी भटकाव के कारण इस बार सैकड़ों पुलिसवालों को घेरकर नक्सलियों ने उन पर जानलेवा हमला बोल दिया। साल 2013 में इन्हीं नक्सलियों ने कई कांग्रेसी नेताओं समेत 32 लोगों को मार डाला था। ऐसा नहीं है कि केन्द्र और राज्य सरकारों ने अपनी आंख मींच रखी है। वर्ष 2009 में 2258 नक्सली हिंसा की वारदात हुई थी लेकिन 2020 में 665 ही हुईं। 2009 में 1005 लोग मारे गए थे जबकि 2020 में 183 लोग मारे गए।

आंध्र, बंगाल, ओडिशा और तेलंगाना के जंगलों से नक्सलियों के सफाए का एक बड़ा कारण यह भी रहा है कि वहां की सरकारों ने उनके जंगलों में सड़कें, पुल, नहरें, तालाब, स्कूल और अस्पताल आदि बनवा दिए हैं। बस्तर में इनकी काफी कमी है। पुलिस और सरकारी कर्मचारी बस्तर के अंदरुनी इलाकों में पहुंच ही नहीं पाते।

केन्द्र सरकार चाहे तो युद्ध-स्तर पर छत्तीसगढ़-सरकार से सहयोग करके नक्सल-समस्या को महिने-भर में जड़ से उखाड़ सकती है। यह भी जरुरी है कि अनेक समाजसेवी संस्थाओं को सरकार आदिवासी क्षेत्रों में सेवा-कार्य के लिए प्रेरित करे।

वाडीलाल का 800 करोड़ बिक्री का लक्ष्य

उदयपुर (वि.)। जानीमानी आइसक्रीम ब्रैंड वाडीलाल ने इस साल आइसक्रीम की बिक्री में 20 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी होने की उम्मीद व्यक्त की है।

कोविड-19 टीकाकरण में गति, आर्थिक गतिविधियां बढ़ने और खर्च करने की क्षमता में वृद्धि होने से आइसक्रीम उद्योग को प्रोत्साहन मिलेगा। 'वाह! वाडीलाल!!' अभियान के वर्चुअल लॉन्चिंग कार्यक्रम में वाडीलाल ब्रैंड के निदेशक आकांक्षा गांधी ने कहा कि महामारी के पूर्व वर्ष 2019-20 के दौरान वाडीलाल ने 650 करोड़ की आइसक्रीम की बिक्री दर्ज कराई थी, जो कि इस वर्ष 800 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है। अभियान का उद्देश्य लोगों को वाडीलाल की वेरायटी और लाजवाब आइसक्रीम का लुत्फ उठाने के लिए प्रेरित करना है। वाडीलाल ब्रैंड आइसक्रीम की सबसे बड़ी श्रेणी से जुड़ा हुआ है।

यात्रा में सावधानी ही कोरोना से बचाव

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल के वरिष्ठ इन्टरनल मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. संदीप भटनागर ने बताया कि बहुत आवश्यक होने पर ही यात्रा करनी चाहिए। मोबाईल में आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड करने से कोरोना की जानकारी मिलती रहेगी। यात्रा के दौरान हमेशा मास्क का प्रयोग करना चाहिये।

शौचालय के नल, गाड़ी के दरवाजे आदि को हाथ लगाने के बाद हाथ सेनेटाईजर से धोना चाहिए। हैंड ग्लव्ज भी पहन कर रखने चाहिएं और स्टेशन पर उतर कर डस्टबिन में डाल देना चाहिए। इसके साथ डिसपोजेबल बेडशीट/चादर सोने व बैठने से पहले बस व ट्रेन की सीट पर बिछा दे और उतरते समय डस्टबिन में डाल दे। बाहर का खाना बिल्कुल नहीं खाना चाहिए। आंख, नाक व मुंह पर बार-बार हाथ नहीं लगाना चाहिए। बुखार, खांसी, जुकाम आदि लक्षण होने पर कोरोना टेस्ट करवा तुरंत चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिएं।

होण्डा 2 व्हीलर्स इंडिया की नई डीलरशिप दक्ष होण्डा का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया प्रा. लि. ने फतहपुरा-पुला रोड़ पर शहर में तीसरे होण्डा एक्सक्लुज़िव ऑथोराइज़्ड डीलरशिप- 'दक्ष होण्डा' का शुभारंभ किया। इस नए विस्तार के साथ, राजस्थान में होण्डा का कुल सेल्स एवं सर्विस नेटवर्क 387 आउटलेट्स के आंकड़े को पार कर गया है। भारत में अपने संचालन के 20वें वर्ष का जश्न मनाते हुए होण्डा राजस्थान में 20 लाख से अधिक उपभोक्ताओं की पहली पसंद बन चुकी है। रैड विंग मार्क के साथ, दक्ष होण्डा का विविध बीएस-6 पोर्टफोलियो उदयपुर शहर के उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करेगा। इस पोर्टफोलियो में 110 सीसी ऑटोमेटिक स्कूटर से लेकर 200 सीसी मोटरसाइकलों की व्यापक रेंज शामिल है।

होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया प्रा. लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर, प्रेज़ीडेन्ट एवं सीईओ अत्सुशी ओगाता ने कहा कि दक्ष होण्डा में उपलब्ध होण्डा की व्यापक रेंज में 4 ऑटोमेटिक स्कूटर (110 सीसी-एक्टिवा 6जी और डियो ठैटप्, 125 सीसी- एक्टिवा 125 और ग्राज़िया 125) तथा 7 मोटरसाइकलें (110 सीसी-सीडी 110 ड्रीम और लीवो, 125 सीसी-एसपी125 और शाईन, 160 सीसी-यूनिकॉर्न और एक्स-ब्लेड एवं परफोर्मेन्स मोटरसाइकल होर्नेट 2.0) शामिल हैं। वाहन की खरीद के समय डिजिटल बुकिंग प्लेटफॉर्म, रीटेल फाइनैंस ऑफर्स, होण्डा के अनूठे डिजिटल लॉयल्टी प्रोग्राम जॉय क्लब के बेजोड़ रिवॉर्ड्स, वारंटी पैकेज पर बड़ी बचत करने में भी मदद करेगी।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ। कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1500/
साहित्यिक चौपाल	1000/
वार्षिक संस्थागत	500/
वार्षिक व्यक्तिगत	300/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

शब्द रंजन के सहयात्री के रूप में रतलाम निवासी पारसमल नलवाया से 1500/- रूपये साभार प्राप्त हुए।

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (2)

''मरता क्या न करता ? भास्कर के डाक एडीशन की कॉपी मेरे पास थी। उसे फुटपाथ पर बिछाया। समीप की भट्‌टी पर रखी ईंटों में से एक उठाई। सिरहाना बनाया। फुटपाथ पर सोए होटलों के कर्मचारियों के बीच मैं भी सोगया। उसी उदयपुर में मैं सम्पादक बनकर पहुंचा था।''

उदयपुर में फुटपाथ पर रात गुजारी :

उज्जैन में क्षिप्रा नदी के बाद उदयपुर भी नदी-झील यानी पानीवाला इलाका था। जन्मपत्रिका देखनेवाले ज्योतिषियों की यह बात फिर सही साबित हुई कि नदी-पानीवाले स्थान पर नौकरी करेंगे। श्रीगंगानगर भी नहरोंवाला इलाका था। 'दबंग दुनिया' में भोपाल में पदस्थी भी बड़े तालाबवाला शहर रहा। हां रायपुर अपवाद कह सकते हैं।

हां तो उदयपुर ज्वाइनिंग के पहले से झीलों की इस नगरी से भी रोचक किस्सा जुड़ा है। जब एक रात मैं चम्पालाल धर्मशाला के बाहर सड़क पर सोया था तब त्रिमूर्ति ट्रेवल्स वाले बड़े भाई समान सुरेश जैन की बस से यात्रा-टूर पर थे। उस दिन उदयपुर पहुंचे थे।

सहेलियों की बाड़ी, सिटी पैलेस आदि स्थान देखने के बाद रात को चम्पालाल धर्मशाला पहुंचे। खाना खाने के बाद बाकी परिजन आराम करनेलगे और मैंने सोचा दैनिक भास्कर में सम्पादक रवींद्र शाह (मेरी बहन मीना राणा शाह के पति) से मिल लिया जाए।

ऑटो से महासतियां स्थित भास्कर ऑफिस पहुंच गया। बातचीत करते हुए वक्त का पता नहीं चला। इस बीच डॉक एडिशन भी प्रिंट होकर आ चुका था। जाने के लिए ऑटो मिलना संभव नहीं था क्योंकि उदयपुर में दो मर्डर होने के कारण रात्रिकालीन कर्फ्यू लगाहुआ था। रवींद्र ने बस स्टैंड बंडल लेकर जानेवाली टैक्सी से धर्मशाला तक जाने की व्यवस्था करादी। (रवीन्द्र शाह प्रथम सम्पादक बनकर यहां आये। भास्कर का जो पहला अंक प्रकाशित हुआ उसमें सर्वाधिक लेख डॉ. महेन्द्र भानावत के थे। यह अंक अभी भी सुरक्षित है। -**सं.**)

रात्रिकालीन कर्फ्यू के चलते एसटीडी पीसीओ भी बंद :

टैक्सीवाले ने धर्मशाला के सामने सड़क के दूसरे किनारे पर छोड़ा और आगे बढ़गया। मैंने धर्मशाला के विशाल दरवाजे को खूब ठोका। आने-जाने के उपयोग वाले छोटे दरवाजे की कुंडी भी खूब खटखटाई लेकिन दरवाजा नहीं खुला।

धर्मशाला के बाहर दाल-बाटी की दुकानों पर काम करनेवाले वहीं फुटपाथ पर सोए थे। उनमें से एक की नींद खुलगई। उसने कहा, अब ये दरवाजा सुबह ही खुलेगा। मेरे पास उदयपुर भास्कर का और धर्मशाला का फोन नंबर तो था लेकिन फोन करता कैसे, रात्रिकालीन कर्फ्यू के कारण एसटीडी पीसीओ बूथ भी बंद थे।

मरता क्या न करता? भास्कर के डाक एडीशन की कॉपी मेरे पास थी। उसे फुटपाथ पर बिछाया। समीप की भट्‌टी पर रखी ईंटों में से एक उठाई। सिरहाना बनाया। फुटपाथ पर सोए होटलों के कर्मचारियों के बीच मैं भी सोगया। इस सारी प्रक्रिया में दुष्यंतकुमार की गजल याद आती रही, 'मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूं, वो गजल आपको सुनाता हूं..।'

टूर में खर्चे का हिसाब-किताब मेरे जिम्मे होने से रुपए भी मेरी जेब में थे। नींद लग जाए तो कोई जेब से रुपए ना निकालले, सजगता बरतते हुए नोट की गड्‌डी पेंट की चोर जेब में रखली।

कब नींद आगई पता नहीं लेकिन बड़ी सुबह नींद शोरशराबे से खुली। जीप में आए यात्रियों का दल दरवाजे पर हेडलाइट चमकाने के साथ ही जोर-जोर से दरवाजा पीटरहे थे। अंततः चौकीदार ने जब गेट खोला तो उस जीप के साथ मैं भी अंदर जासका। रूम में पहुंचा तो सभी परिजन को जागते, चिंता करते पाया कि मुन्ना कहां रहगया! उन्हें पूरा किस्सा बताया, फोन ना कर पाने का कारण भी बताया, तब कहीं सब निश्चिंत हुए। और अब उसी उदयपुर में मैं सम्पादक बनकर पहुंचा था।

उज्जैन से उदयपुर भास्कर ज्वाइन किया :

सात दिन तक उदयपुर में सुधीरजी के प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान मैं स्टाफ के नाम-बीट आदि से परिचित हो ही चुका था। अब मैं सम्पादक उदयपुर के पदपर वहां पहुंचा था। तब वहां एचआर हेड थे अजय माथुर। उन्होंने मुझे जानकारी दी कि आप उदयपुर पहुंच जाएं तो सीधे होटल (संभवतः) सागर पर पहुंच जाएं। सात दिन के लिए वहां भास्कर के नाम पर कमरा बुक है।

सुबह बस से उदयपुर और वहां 'ओटो' (हम यहां ऑटो बोलते हैं) से होटल पहुंच गया। कुछ देर आराम किया। फिर अजय माथुरजी को सूचना दी कि 11 बजे तक पहुंच जाऊंगा। दीदी और जीजाजी को सूचना दी कि मैं आगया हूं। इस होटल में ठहरा हूं। आधे-पौन घंटे बाद तो जीजाजी भन्नाते हुए आगए कि जब अपना घर है, हम लोग हैं तो होटल में ठहरने की क्या जरूरत है। उन्होंने मेरी अटैची उठाई और आदेशात्मक लहजे में कहा, चाय खत्म कीजिए और घर चलिए।

मैंने कुछ कहना चाहा तो जवाब था एक नहीं सुनूंगा। स्मिता ने कहा है साथ लेकर ही आना। मैंने समझाया कि ऑफिशियल इंतजाम है। सात दिन यहां ठहरकर आ जाऊंगा। यदि अभी आपके साथ चलागया तो उदयपुर से भोपाल तक मैसेज ठीक नहीं जाएगा।

उदयपुर स्टॉफ भी आपसे बेवजह खुन्नस पाललेगा (अरुण चतुर्वेदी टाउन प्लानर के रूप में शासकीय सेवा में थे, मैं नहीं चाहता था कि चतुर्वेदी परिवार से मेरे रिश्ते उनकी नौकरी में परेशानी का कारण बनें)।

बोहरा गणेश मंदिर में ज्वाइनिंग दी :

जीजाजी का कहना था, तैयार होकर पहले घर चलिए। वहां से मैं ऑफिस छोड़दूंगा। मैं घर गया। दीदी और भांजा, दोनों भांजिया खुश होगईं। चाय-नाश्ता करने के बाद कार से ऑफिस के लिए रवाना हुए। गणपति कॉलोनीवाले रास्ते पर ही बोहरा गणेशजी मंदिर स्थित है। उदयपुर के आमजन की इस मंदिर के प्रति गहरी आस्था की जानकारी चतुर्वेदी परिवार पहले ही बता चुका था। मंदिर के निकट पहुंचे ही थे कि मैंने जीजाजी से गाड़ी रुकवाई, कहा कि दर्शन करते हुए चलते हैं।

मंदिर के सामने लड्‌डू की दुकान से आधा किलो लड्‌डू, हार-नारियल-अगरबत्ती लेकर मंदिर में पूजा की। प्रसाद चढ़ाया और बोहरा गणेशजी को अपनी ज्वाइनिंग की सूचना देकर कामना कि जैसा आप का नाम है, उदयपुर में मेरा भी ऐसा ही नाम करना। कुछ प्रसाद चतुर्वेदी परिवार के लिए रखा और बाकी भास्कर ऑफिस लेकर पहुंचा।

गेट पर खड़े गार्ड से लेकर चौकीदार को प्रसाद बांटते हुए अंदर पहुंचा। उस वक्त यूनिट हेड वीरेंद्र पठानिया (बाद में वे अमर उजाला ग्रुप से जुड़गए) थे। माथुरजी ने उनसे मुलाकात कराई। सम्पादकीय टीम अंदर इंतजार कररही थी। केबिन में शिवकुमार विवेकजी को प्रसाद दिया और फिर ऑफिस के प्यून ने सबमें बांटदिया। (शिवकुमारजी के समय डॉ. भानावत से भास्कर सलाहकार के रूप में सेवाएं लीगईं। -**सं.**)

विवेकजी ने सभी साथियों (प्रकाश शर्मा, सैयद हबीब, संजय गौतम, विपिन गांधी, गीता सुनील, सुनील शर्मा, बलदेव शर्मा, श्रीकृष्ण 'जुगनू', देव शर्मा, माणक शर्मा, फोटोग्राफर अख्तर खान, ऋषभ जैन, (कुछ नाम याद नहीं आरहे) आदि से परिचय कराया।

इस औपचारिक मीटिंग के बाद विवेकजी के साथ इंदौर और नई दुनिया को लेकर चर्चा होतीरही। इंदौर की खान/कान्ह नदी की तरह आयड़ नदी को लेकर चलाए भास्कर अभियान की जानकारी विवेकजी ने दी।

राजस्थान के स्टेट हेड ज्वाइन कराने आए थे :

उज्जैन से उदयपुर आरई के पद पर जब मेरा ट्रांसफर हुआ तब राजस्थान के स्टेट हेड थे एन. के. सिंह। साधिकार हिन्दी-अंग्रेजी पत्रकारिता करनेवाले जिन पत्रकारों से मध्यप्रदेश पहचाना जाता है उनमें एन. के. सिंह का नाम भी अपरिचित नहीं है। भोपाल से आदेश जारी हो ही चुका था कि एन. के. सिंह ज्वाइन कराने उदयपुर जाएंगे।

मैं उनके नाम-काम से तो बहुत पहले से प्रभावित था। उस दोपहर आमने-सामने की उनसे मेरी भी पहली मुलाकात थी। फुल हाउस मीटिंग के दौरान अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में स्टॉफ से मेरा परिचय कराया। सहयोग की अपेक्षा की और भोपाल जारहे विवेकजी के उज्ज्वल भविष्य की भी कामना की। वे उसी शाम रवाना होगए थे।

पता नहीं स्टॉफ में एन. के. सिंहजी के नाम का खौफ क्यों था। मैं उन्हें पत्रकारिता का आयएएस अफसर मानता रहा हूं। टू द पॉइंट बात करना, अच्छे काम की सराहना के साथ गलतियों पर तुरंत अपना रुख जाहिर करना, कम बोलना, और बोलने से अधिक लिखकर बात करना उनकी खासियत देखी।

जयपुर ऑफिस से शायद ही कोई दिन ऐसा रहा हो जिस दिन राजस्थान के एडिटर को उनके निर्देशवाले पत्र ना मिलते हों। खबरों के इनपुट से लेकर कार्यालय की वर्किंग आदि को लेकर कई बार उनके ऑफिस से दोपहर तीन बजे तक जवाब भेजने के निर्देशात्मक पत्र आते थे, शायद यह उनके पीए की ढिलाई रहती होगी कि जवाब देनेवाले ये पत्र कईबार तीन बजे के बाद भी मिले। हां, पर जितने भी समय वे स्टेट हेड रहे सभी एडीशन के सम्पादक अलर्टरहे और काम को लेकर भी सजगता बरततेरहे।

विदाई देने से चुप्पी साधली अधिकांश ने :

विधिवत ज्वाइनिंग करवा कर एन. के. सिंह तो उसी दिन लौटगए। अगले दिन की मार्निंग मीटिंग में मैंने एडिटोरियल टीम से चर्चा में कहा कि आप लोग बताओ, शिवकुमारजी का विदाई समारोह कब रखलें ? मेरी इस बात पर साथियों ने चुप्पी साध ली। फिर से पूछा तो कुछ ने कहा, हमारा कोई इंट्रेस्ट नहीं है। मैंने कहा, आपस में कांट्रिब्यूशन करलेंगे। जवाब मिला कि न आर्थिक सहयोग करेंगे न ही पार्टी में आएंगे। साथियों का अपने पूर्व सम्पादक के प्रति यह रवैया मेरे गले नहीं उतरा।

मीटिंग समाप्ति के बाद सिटी चीफ प्रकाश शर्मा और रीजनल हेड बलदेव शर्मा से चर्चा में मैंने कहा, हम तीनों मिलकर विवेकजी को लंच देंगे। उन दोनों की सहमति के बाद विवेकजी को एक होटल में लंच देने के साथ ही मैं लेपटॉप के लिए उज्जैन से जो नया लेदर बेग लेकर गया था, वह बैग स्मृति चिह्न के रूप में उन्हें भेंट किया। - **क्रमश :**

कितना अच्छा होता

-डॉ. दीनदयाल ओझा-

कितना अच्छा होता
कबूतर की तरह
दाना इकट्‌ठा न कर मानव
चुगना सीखता।
कितना अच्छा होता
मानव बगुलों की सीख
न सीख
हंसों की सीख सीखता।

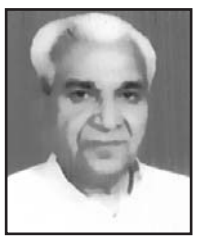

कितना अच्छा होता
मानव ययाती की तरह
जीवन न जी
जनक की तरह जीवन जीता।
कितना अच्छा होता
हम असद् ज्ञान न सीख
सद् ज्ञान सीखते
और ऋषियों सा जीवन जाते।
कितना अच्छा होता
हम असद् का ज्ञान न सीख सद् ज्ञान सीखते
और विकास के सर्वोच्च शिखर चढ़
विश्व गुरु गरिमा प्राप्त करते।
कितना अच्छा होता
हम पाप-पुण्य का
अन्धानुकरण न कर
पुण्यपथ के पथिक बनते
और अपनी ही (मां) धरती का
अमृत पान कर
असद् नहीं
सद् जीवन जीते।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।